Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

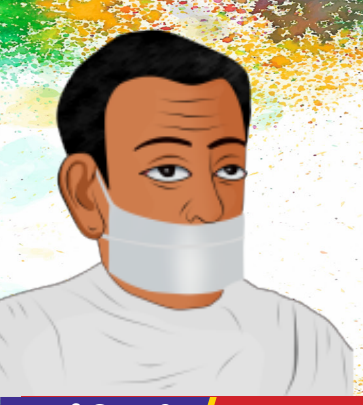


# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

terapanthtimes.com

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र


दुगुणं करेइ से पावं,
पूयणकामो विसण्णेसी।
जो पूजा का इच्छुक और
असंयम का आकांक्षी होता है,
वह दूना पाप करता है।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली ● वर्ष 25 ● अंक 24 ● 18 - 24 मार्च, 2024 ● प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 16-03-2024 ● पेज 12 ● ₹ 10 रुपये

# एकमात्र अध्यात्म दे सकता है त्राण व शरण : आचार्यश्री महाश्रमण

## ■ अणुव्रत अमृत महोत्सव के त्रिदिवसीय सम्पूर्ति समारोह के प्रथम दिन पहुंचें लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष शिवराज पाटिल

**महाड़।**
**१० मार्च, २०२४**

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में अणुव्रत विश्व भारती द्वारा अणुव्रत अमृत महोत्सव के त्रिदिवसीय सम्पूर्ति समारोह का शुभारम्भ आचार्य प्रवर के मंगल मंत्रोच्चार एवं अणुव्रत गीत के संगान के साथ हुआ।

आचार्य प्रवर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि मनुष्य जीवन में बीमारी, बुढ़ापा और मृत्यु से कोई किसी को त्राण-शरण नहीं दे सकता। एक मात्र अध्यात्म और धर्म ही ऐसा त्राण दे सकता है जिससे आत्मा इतनी ऊपर उठ जाती है कि उसके बाद न मृत्यु है, न जन्म है और न बीमारी है। अध्यात्म के द्वारा आत्मा परमात्म स्वरूप को प्राप्त कर लेती है। साधु बन जाना, परमात्म पद पा लेना बहुत ऊंची बात हो सकती है।

आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया था। वे तो १२ वर्ष की आयु में ही साधु बन गये थे, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी भी छोटी उम्र में साधु बन गए थे, पर हर कोई तो साधु बन नही सकता। साधु के लिए महाव्रतों की बात निर्दिष्ट है, गृहस्थों के लिए अणुव्रत का मार्ग अच्छी जीवन शैली का उपाय है। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत को व्यापक रूप प्रदान किया था कि जैन-अर्जन कोई भी हो, किसी भी धर्म-सम्प्रदाय को मानने या न मानने वाला हो वह भी अणुव्रती बन सकता है। चाहे आस्तिक हो या नास्तिक, नैतिकता, संयम, सद्भावना और अहिंसा को अच्छा मानता हो तो वह अणुव्रती बन सकता है। अच्छे नियमों को स्वीकार करने से व्यक्ति की चेतना अच्छी रह सकती है, जीवन अच्छा बन सकता है।

अणुव्रत का अमृत महोत्सव वर्ष सम्पन्नता की ओर है। अणुव्रत के लिए कितने-कितने लोगों ने श्रम किया, समय दिया है। कितने कार्यकर्ता नींव के पत्थर बने थे, उनका कितना बड़ा योगदान है। आज भी कार्यकर्ता अपना श्रम, शक्ति और समय अणुव्रत को आगे बढ़ाने में लगा रहे हैं। शिवराजजी पाटिल भी अणुव्रत से जुड़े हुए हैं, ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व का कार्यक्रम में उपस्थित होना अपने आप में कार्यक्रम की शोभा बन जाता है। चुनाव सामने हैं, उसमें भी अणुव्रत की प्रेरणा रहे, चुनाव में शुद्धता रहे। जो लोग पूर्व में अणुव्रत से जुड़े हुए थे, उनकी दूसरी, तीसरी पीढ़ी के लोग भी अणुव्रत से जुड़कर यथासंभव योगदान करने का प्रयास करें।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यदि हमारे पास जीवन जीने की कला हो तो जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान प्राप्त हो सकता है। जीवन जीने की कला सर्वोत्तम कला है, इसका अर्थ है शान्ति पूर्ण जीवन जीना। भीतर का सुख प्राप्त करने के लिए शान्ति पूर्ण जीवन जीना सीखना होगा। सभी सुख चाहते हैं, इसके लिए हमारे जीवन में सहजता होनी जरूरी है। सहज जीवन जीने के दो सूत्र बताए गए हैं - पहला बात को सामान्य रूप में लेना सीखें, दूसरा हम मान-अपमान में सम रहने का प्रयास करें।

मुख्य अतिथि लोकसभा पूर्व अध्यक्ष, अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित श्री शिवराज पाटिल ने अपने वक्तव्य में कहा कि मैं तो यहां आचार्यश्री के विचार सुनने आया हूं। पूर्वाचार्यों की सन्निधि में भी मुझे बार-बार आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अणुव्रत के संबंध में अनेक ग्रंथों का निर्माण हुआ है।

मनुष्य को सुख प्राप्ति के करणीय और अकरणीय कार्यों का उल्लेख उन ग्रंथों से प्राप्त हो सकता है। दुनिया में अनेक धर्म हैं, सारे धर्मों के अंदर ऐसी चीजें बताई गई हैं, जिन्हें समझ कर चलें तो सुख, शांति और प्रगति संभव है। अणुव्रत के विचार से एकता बनी रह सकती है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से अणुव्रत की यात्रा को दर्शाया गया।

(शेष पृष्ठ २ पर)

# आदमी के दिमाग में रहे अणुव्रत : आचार्य श्री महाश्रमण

**वहूर।**
**११ मार्च, २०२४**

दो दिवसीय महाड़ प्रवास पूर्ण कराकर जिनशासन प्रभावक अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी वहूर के फजंदार इंग्लिश स्कूल में पधारे। परम पावन आचार्य प्रवर ने मंगल पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि जिस जगत में हम जी रहे हैं, उसमें दुःख बहुलता है। सुख भी मिलते हैं, तो संसार में दुःख भी मिलते हैं। अनेक कारणों या समस्याओं से दुःख हो सकता है। शारीरिक, मानसिक और आर्थिक दुःख भी हो सकता है।

अनेक लोगों के पास भौतिक सुख भी हैं, अनुकूलताएं भी हैं, तो दुनिया में दुःख भी हैं। दुःखों से छुटकारा मिले और आगे दुर्गति में न जाना पड़े, इसके लिए अध्यात्म एक मार्ग है। हम संवर-निर्जरा की अच्छी साधना करें। कर्म निर्जरा से जो आत्म शुद्धि होती है वह सुख है। सुख दो प्रकार का हो जाता है- एक भौतिकता से मिलने वाला सुख, दूसरा कर्मों की निर्जरा से मिलने वाला सुख। ये बाहरी भौतिक सुख भी दुःख का कारण बन सकते हैं। हमें भीतर के सुखों की ओर ध्यान देना चाहिए। आध्यात्मिकता से हमें स्थायी सुख प्राप्त हो सकता है।

विद्या संस्थानों में अलग-अलग विषय पढ़ाए जाते होंगे। ज्ञान अपने आप में जीवन की एक उपलब्धि है। परन्तु ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार भी बच्चों को परोसे जाएं, विद्या संस्थानों में संस्कार युक्त शिक्षा दी जाए। अहिंसा, ईमानदारी, विनय, सरलता, निर्भीकता के संस्कार दिया जाए। विद्यार्थियों में सभी मनुष्यों, प्राणियों के प्रति मैत्री का भाव हो, नशा मुक्ति भी हो। अणुव्रत में यही बातें हमें प्राप्त होती है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन में छोटे-छोटे नियमों की बात बतायी है। अणुव्रत के नियम-संकल्प स्वीकार किये जाएं तो आदमी का विकास हो सकता है। ज्ञान के लिए कितना प्रयत्न किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा के प्रति रुझान और समर्पण है। पर शिक्षा के साथ संस्कार भी हो। विद्या विनय से सुशोभित होती है। विद्या, विनय और विवेक की त्रिवेणी है। विद्यार्थी विद्यावान, विनयवान और विवेकवान बनें। बच्चे अच्छे होगें तो राष्ट्र, समाज और धार्मिक संघों का भी अच्छा विकास हो सकता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

# अनित्य मनुष्य जीवन में प्रमाद नहीं करें : आचार्यश्री महाश्रमण

## 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी स्मृति सभा का हुआ आयोजन

महाड़।
९ मार्च, २०२४

तीर्थंकर के प्रतिनिधि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी आज कोंकण के महाड़ में अपनी धवल सेना के साथ द्वि-दिवसीय प्रवास हेतु पधारे। महामनीषी आचार्य प्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में नित्यता भी है और अनित्यता भी है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और जीवास्तिकाय ये चारों अमूर्त अस्तिकाय हैं, ये नित्य होते हैं। जीवास्तिकाय में आत्मा है, आत्मा नित्य है, क्योंकि आत्मा के जो असंख्य प्रदेश हैं उनको कोई छिन्न-भिन्न नहीं कर सकता। आत्मा के असंख्य प्रदेश का पिंड हमेशा था, है और रहेगा।

आचार्य श्री भिक्षु की रचना 'तेरह द्वार' का एक वाक्यांश है:

**'चारां री पर्याय पलटे नहीं, एक पुद्गल री पर्याय पलटे।'**

अर्थात् धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और जीवास्तिकाय इन चारों की पर्याय परिवर्तन नहीं होती इसलिए ये नित्य हैं। जीव के प्रदेशों का विनाश नहीं होता परंतु परिवर्तन इस रूप में हो सकता है कि आत्मा के असंख्य प्रदेशों का पिंड आज हाथी के शरीर में है तो कभी कुंथु के शरीर में भी समाविष्ट हो सकता है।

आत्मा कभी पूरे लोक में फैल जाए, कभी मनुष्य के शरीर में, कभी नारक के शरीर में, कभी देव तो कभी तिर्यंच के शरीर में भी समा जाए। किसी भी गति में आत्मा जाए उसके प्रदेश एक भी कम ज्यादा नहीं हो सकते। शरीर का परिवर्तन हो सकता है, पर आत्म प्रदेशों का नहीं। इस प्रकार आत्मा की नित्यता भी हो गई और शरीर की अनित्यता भी हो गई।

उत्तराध्ययन के दसवें अध्याय के पहले श्लोक के माध्यम से प्रमाद से बचने की प्रेरणा दी गई कि जिस प्रकार एक वृक्ष का पका हुआ पत्ता गिर जाता है, उसी प्रकार मनुष्यों का जीवन भी कभी न कभी समाप्त हो जाता है। इसलिए कहा गया- हे गौतम! समय मात्र भी प्रमाद मत करो। यह मनुष्य जीवन अनित्य है, अशाश्वत है, इसमें प्रमाद नहीं करें।

चतुर्दशी पर हाजरी वाचन के संदर्भ में पूज्य प्रवर ने फरमाया कि जिसको साधुत्व मिल गया है, उसको दुनिया की बहुत बड़ी चीज मिल गयी है। इसके सामने भौतिक चीज ना कुछ जैसी है। कोई व्यक्ति राजा तो पुण्य के उदय से बनता है पर साधु क्षयोपशम के योग से बनता है। साधु अमूर्त भाग्य से युक्त है, राजा मूर्त भाग्य वाला होता है। इस प्रकार साधु अधिक सौभाग्यशाली है। साधु के पांच महाव्रत अमूल्य हीरे हैं। पांच महाव्रतों रूपी हीरों की ज्यादा से ज्यादा सुरक्षा करने का प्रयास करते रहें। पूज्य प्रवर ने हाजरी वाचन कराते हुए साधु-साध्वी समुदाय को मर्यादाओं के पालन में जागरूक रहने की प्रेरणा प्रदान करवायी।

मुख्य प्रवचन एवं हाजरी वाचन के पश्चात पूज्य प्रवर की सन्निधि में 'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी की स्मृति सभा का आयोजन हुआ। साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने कहा सप्तम् साध्वीप्रमुखा श्री लाडांजी के करकमलों से दीक्षित साध्वी सोमलता जी मधुर व्याख्यानी थी, मधुर गाती भी थी और उनका व्यवहार भी मधुर था। सहवर्ती साध्वियां उनके प्रति समर्पित थी और उन्होंने साध्वी सोमलता जी की अच्छी सेवा भी की। उनकी आत्मा ऊर्ध्वारोहण करती रहे।

मुख्य मुनिश्री महावीर कुमार जी ने कहा कि जिसके पास धर्म का पाथेय होता है वह अगले जन्म में अल्प कर्म वाला होता है। साध्वी श्री सोमलता ने धर्म का ऐसा पाथेय तैयार करने का प्रयास किया जिससे उनका वर्तमान जीवन भी अच्छा रहा और आगे भी अच्छा होगा। वे तीन वर्ष की चाकरी के ऋण से भी ऊऋण हो चुकी थी। उनकी आत्मा सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बने। साध्वी मैत्रीयशाजी ने साध्वी सोमलता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी वृंद ने साध्वी सोमलताजी की स्मृति में गीत का संगान किया।

पूज्य प्रवर ने साध्वी सोमलता जी का जीवन परिचय देते हुए उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलभावना अभिव्यक्त की एवं चार लोगस्स का ध्यान करवाया। मुंबई चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदन लाल तातेड़ एवं मनोहर गोखरू ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी सोमलता जी के संसारपक्षीय भतीजे महेंद्र बैद, दादर सभाध्यक्ष गणपत मारू एवं तेरापंथ महिला मंडल दादर ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्य प्रवर के स्वागत में लादूलाल गांधी, पवन देसरला, अर्हं मांडोत ने अपने विचार प्रस्तुत किए। तेरापंथ महिला मंडल, जैन समाज युवक मंडल, ज्येष्ठ श्रावक संघ ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## प्रथम पृष्ठ का शेष

### एकमात्र अध्यात्म दे सकता है त्राण व शरण : आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत समिति मुंबई के सदस्यों ने गीत का संगान किया। अणुविभा सोसायटी के अध्यक्ष अविनाश नाहर, एवं अमृत महोत्सव संयोजक संचय जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। सम्मान प्राप्तकर्ताओं की ओर से भीखम चंद कोठारी ने भाव प्रस्तुत किए। मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, खुशबू सेठिया ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। ७५ वर्षों के कार्यों का एल्बम पदाधिकारियों द्वारा पूज्य प्रवर को समर्पित किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत के लगभग ५० पूर्व कार्यकर्ताओं का सम्मान अणुव्रत विश्व भारती द्वारा किया गया। सह संयोजक लादूलाल गांधी ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के महामंत्री भीखम चंद सुराणा एवं मर्यादा कुमार कोठारी ने किया। महाड़ वासियों की ओर से अभिवंदना के क्रम में महाड़ जैन समाज महिला मंडल, महाड़ की बहिन बेटियों ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथ किशोर मंडल एवं कन्या मंडल की संयुक्त प्रस्तुति हुई। तेयुप अध्यक्ष विक्रम गांधी एवं गौतम बोहरा ने पूज्य प्रवर के स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए।

### आदमी के दिमाग में रहे अणुव्रत : आचार्य श्री महाश्रमण

श्रुत संपन्न और शील संपन्न बनें। बाल-पीढ़ी बहुत महत्वपूर्ण सम्पदा होती है, बाल पीढ़ी पर ध्यान रहे, उन्हें अच्छे संस्कार देने का प्रयास होता रहे।

इंसान-इंसान के प्रति मैत्री रखे। सब जीवों के प्रति मैत्री, अहिंसा का भाव रहे। अहिंसा की बात धर्म ग्रन्थों में मिलती है, वो हमारे जीवन में आये तब उपयोगी हो सकती है। अणुव्रत हर जगह होना चाहिए, मूल बात है कि आदमी के दिमाग में होना चाहिए। पूज्यप्रवर ने स्थानीय लोगों, विद्यालय से जुड़े सदस्यों एवं विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की संकल्पत्रयी के बारे में समझा कर उन्हें संकल्प स्वीकार करवाये। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर, अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा, संपूर्ति समारोह सह संयोजक राजेश मेहता, विद्यालय से राही फजंदार, एवं रमेश खोत ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के सहमंत्री मनोज सिंघवी ने किया।

# ईमानदारी को आदरास्पद और आचारणात्मक स्थान दें : आचार्य श्री महाश्रमण

लोणेर।
७ मार्च २०२४

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी कोंकण यात्रा के अन्तर्गत लोणेर पधारे। मंगल दशना प्रदान कराते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि अणुव्रत का पचहतरवां वर्ष चल रहा है उसी संदर्भ में यह अणुव्रत यात्रा भी हो रही है। भगवान महावीर से जुड़ा यह जैन शासन है। जैन वांगम्य में महाव्रत और अणुव्रत की बात बताई गई है।

साधुओं के लिए पांच महाव्रत पालनीय होते हैं, तो गृहस्थों के लिए अणुव्रत समाचरणीय होते हैं। अणुव्रत के दो स्वरूप हैं एक जैन श्रावकों के लिए बारह व्रतों के रूप में, दूसरा आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन के रूप में। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत को व्यापक रूप दिया, अणुव्रत की अपनी आचार संहिता के नियम हैं, इसकी आचार संहिता को किसी भी धर्म का, सम्प्रदाय का व्यक्ति स्वीकार कर सकता है।

सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति - इस सूत्रत्रयी में अणुव्रत सार आ जाता है। कोई भी इनको स्वीकार कर गुडमैन बन सकता है। ईमानदारी के दो आयाम हैं- झूठ नही बोलना, चोरी नहीं करना। वृत्त और वित्त दो शब्द आते हैं। वृत्त का अर्थ है चारित्र–आचरण और वित्त अर्थात् पैसा। वित्त तो आता है, चला जाता है। हमें वृत्त की, चरित्र की प्रयत्नपूर्वक सुरक्षा करनी चाहिये।

जीवन में ईमानदारी के भाव को पुष्ट रखना चाहिए। दुकानदार ईमानदार होना चाहिये। झूठ बोलने से शुचिता में कमी आ सकती है। ईमानदारी तो व्यापक है, पैसे की बात हो, कोई लेन-देन हो, न्यायालय का काम हो, हर जगह ईमानदारी रहनी चाहिए। झूठ और कपट का जोड़ा है तो सरलता और सच्चाई का जोड़ा है। हम अपने जीवन में ईमानदारी को आदर देने का और आचरण में लाने का प्रयास करें। ईमानदारी से आत्मा निर्मल रह सकती है। गृहस्थ कपट से बचकर, साफ सुथरा व्यवहार रखने का प्रयास करें। पूज्यप्रवर के स्वागत में प्रदीप गांधी ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

# लाडांजी की लाडली 'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलता जी

● मुनि कमलकुमार ●

'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी का जन्म गंगाशहर में माता कल्याण मित्र, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. केसरदेवी पिता स्व. रतनलाल जी के घर ७ नवंबर १९५१, कार्तिक शुक्ला अष्टमी संवत २००८ के दिन हुआ। आप चार भाईयों पर प्रथम बहन जन्मी। आपसे छोटी एक बहन और तीन भाई थे, इस प्रकार ९ भाई-बहनों का बड़ा परिवार था। आपके नानाजी टीकमचंद जी चोपड़ा का स्वर्गवास हुआ, उस समय आप बिहार (जलालगढ़) से गंगाशहर आये और उस समय आचार्यश्री तुलसी बीकानेर में विराज रहे थे। आप अपनी माता केसरदेवी, मासी की बेटी बहन मीनू (साध्वी मधुरेखाजी) गंगाशहर से पैदल सुबह का प्रवचन सुनने जाते। एक दिन गुरुदेव ने सहज आप लोगों की नियमितता देखकर पुछवाया! तुम लोग नियमित व्याख्यान सुनते हो, क्या व्यख्यान समझ में आता है? सभी ने कहा व्याख्यान सुनने में इतना आनंद आता है कि एक दिन भी छोड़ने का मन नहीं होता। इसलिए हम लोग गंगाशहर से सबसे पहले पहुंचते हैं ताकि बैठने के लिए प्रथम पंक्ति में स्थान मिल सके। पूज्य प्रवर ने कई प्रश्न पूछे, प्रश्नों का सटीक उत्तर सुनकर गुरुदेव प्रसन्न हुए।

गुरुदेव ने दूसरा प्रश्न पूछा–बताओ दीक्षा कौन-कौन लोगे? दोनों बहनों ने साहस बटोरकर कहा 'हम लेंगे'। गुरुदेव ने कहा पक्की रहना। घर आये और दोनों बहने मीनू और शांति दीक्षा की तैयारी में लग गयी। परंतु उस समय पिताजी परदेश थे, माता केसरदेवी ने साहस करके पुत्री की भावना को साकार करने में पूरा सहयोग दिया। भीनासर निवासी गुलाबचंदजी बैद से सलाह करके संस्था में प्रवेश करवाया। परिवार से पहले शासनश्री मुनि श्री गणेशमलजी स्वामी दीक्षित थे, इसलिए पूरे परिवार में सेवा दर्शन की भावना रहती थी। आपकी तीव्र वैराग्य भावना देखकर पारिवारिक सदस्यों ने पूज्य प्रवर से दीक्षा की अर्ज की। उस समय पूज्य प्रवर की दक्षिण यात्रा चल रही थी। साध्वी प्रमुखा लाडांजी बीदासर में विराजमान थी। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव चल रहा था।

भाईजी महाराज (चंपालालजी स्वामी) के मन में भावना जागृत हुई की एक दीक्षा बीदासर लाडांजी के हाथ से हो। पूज्य गुरुदेव ने भाईजी महाराज की भावना को ध्यान में रखकर आपकी दीक्षा बीदासर महासती लाडांजी के द्वारा घोषित की। आप गुरु दृष्टि पाकर अपने आपको भाग्यशाली मानने लगी। वि.सं.२०२५ कार्तिक कृष्णा अष्टमी के दिन, मातुश्री छोगा जी के स्मारक स्थल पर, मातुश्री वदनांजी के पावन सान्निध्य में बीदासर में, साध्वी प्रमुखा लाडांजी के कर कमलों से दीक्षा हुई। उस दिन सोमवार था, आपका नाम सोमलता रखा गया। दीक्षा के पश्चात आपको 'शासनश्री' साध्वी श्री कंचनप्रभाजी के पास नियुक्त किया गया। 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी ने आपको साधु जीवन के गहरे संस्कार दिये, जिन्होंने जीवन के अंतिम श्वास तक आपको हर तरह से उन्नत बनाये रखा।

साध्वी प्रमुखा लाडांजी के स्वर्गवास के पश्चात आपका प्रथम चातुर्मास सरदारशहर साध्वी सुंदरजी के साथ हुआ, तत्पश्चात शासनश्री साध्वी संघमित्राजी, शासनश्री साध्वी कमलश्रीजी के साथ भी रहना हुआ। आपकी क्षमताओं को देखकर पूज्य प्रवर ने गुरुकुल वास में रखा और वि.सं. २०३९ में आपको अग्रगण्य की वंदना करवाकर सरदारपुरा (जोधपुर) में आपका चातुर्मास फरमाया। तब से अंतिम समय तक पूज्य प्रवरों की आप पर विशेष कृपा दृष्टि बनी रही। आपने बिहार, बंगाल, असम, सिक्किम, नेपाल, भूटान की सफल यात्रा करके गुरुदेव के दिल में विशेष स्थान बनाया। बीदासर, गंगाशहर, श्रीडूंगरगढ़ तीनों सेवा केन्द्रों में सेवा देकर ऋण मुक्त होकर गौरव की अनुभूति की। आपकी सहयोगिनी साध्वी कीर्तिलताजी को आपके रहते ही अग्रगण्य बनाया। तीनों बहने (कीर्तिलताजी, शांतिलताजी, पूनमप्रभाजी) वर्षों तक आपके साथ रही। इन वर्षों में आप काफी अस्वस्थ रहने लगी। महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की पूर्ण कृपा से कई वर्षों से आपका मुंबई में दीर्घ कालीन प्रवास रहा। आपकी व्याख्यान शैली से, आपके सरस गीतों और व्यवहार से आबाल वृद्ध प्रसन्न थे। इस बार पूज्य प्रवर का मुंबई चातुर्मास होने से पूज्य प्रवर की सेवा-उपासना, प्रवचन का लाभ मिल सका। स्वास्थ्य की गिरावट को देखकर चातुर्मास में ही उपचार के लिए पार्ले में आना पड़ा। वर्षों से आपके स्वास्थ्य की पूरी जानकारी रखने वाले दिलीप सरावगी ने अंतिम श्वास तक अपना पूरा दायित्व निभाया। इस वर्ष का मेरा चातुर्मास दिल्ली घोषित था। चातुर्मास के बाद भी पूज्य गुरुदेव, करुणा के भंडार आचार्य श्री महाश्रमण जी ने दिल्ली के प्रभावी कार्यक्रमों को सुनकर '१२ फरवरी २०२४ तक दिल्ली में रहा जा सकता है' ऐसा संदेश भी प्रदान करवाया था।

दिल्ली वासियों की भावना भी यही थी कि गुरुदेव की आज्ञा प्राप्त हो चुकी है, आप दिल्ली में ही विराजें। परंतु सहयोगी दोनों संत मुनि अमन कुमारजी, नमिकुमारजी का आग्रह रहा कि गुरुदेव के दर्शन करने ही हैं तो मुंबई में ही करें, जिससे गुरुदेव के दीक्षा कल्याण वर्ष और शासन श्री साध्वी सोमलताजी से भी मिलना हो जाये। संतों की आंतरिक भावना ही मुझे समय पर श्री चरणों में पहुंचा पायी। रास्ते में विघ्न - बाधायें भी आयी परंतु रास्ते की सेवा में रत मनोज सुराणा का पूरा परिवार हमें सकुशल वसंत पंचमी को श्रीचरणों में पहुंचा सका।

एक दिन पूर्व बहुश्रुत परिषद के सदस्य मुनि दिनेशकुमार जी आदि संत आये और उन्होंने मधुर गीत का संगान कर फरमाया कि 'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी काफी अस्वस्थ हैं, उन्हें दर्शन देने जरुरी हैं। मैं संतों के विचार सुनकर भाव विह्वल हो गया। दूसरे दिन गुरुदेव के दर्शन किये, हृदय में खुशी का पार नहीं रहा। गुरुदेव स्वयं अगवानी करने पधारे।

गुरु शिष्य का विनय, वात्सल्य अपने आप में धर्मसंघ की गरिमा महिमा बढ़ाने वाला होता है। मैंने श्रीचरणों में संत, पुस्तक पन्ने भेंट कर गीत का संगान किया। पूज्य प्रवर प्रसन्न थे, हाथ से संकेत कर मुझे नजदीक बुलाकर फरमाने लगे कि आप एक बार सोमलता जी को दर्शन दिला दें। मैंने निवेदन किया कब जाएं? पूज्य प्रवर ने फरमाया आज ही पधार जायें।

मैंने निवेदन किया कि संदेश की कृपा करावें। पूज्य प्रवर प्रवचन पंडाल पधारने वाले थे, समय हो चुका था, पूज्य प्रवर ने कृपा बरसाते हुए फरमाया कि आप एक बार पंडाल पधारें फिर जैसा उपयुक्त समझें, वहीं से पधार जायें। मैं अयाचित गुरुकृपा पाकर निहाल हो गया। उपर पहुंचकर संतो से खमत-खामणा की। मुनि जंबूकुमारजी, मुनि मनन कुमारजी ने कहा, आप अतिरिक्त सामान यही छोड़ दे हम संभाल लेंगे। मैंने अतिरिक्त सामान वहां रखकर ज्योंही प्रवचन पंडाल में प्रवेश किया, तब तक पूज्य प्रवर, साध्वी प्रमुखाश्रीजी आदि सभी पहुंच चुके थे। कार्यक्रम प्रारंभ होते ही दिनेशमुनि ने पूज्य प्रवर के प्रवचन के पूर्व ही मुझे बोलने का अवसर दिया। मैंनें संक्षिप्त में अपनी भावना रखकर विहार की अनुमति मांगी। पूज्य प्रवर ने प्रवचन पंडाल में ही अपने प्रवचन को विराम देकर संदेश लिखवाया, साध्वीप्रमुखाश्री जी को भी गुरुदेव ने पत्र के लिए संकेत किया, उन्होंने भी संदेश की कृपा करवाई, पूज्य प्रवर ने मंगलपाठ सुनाया और पट्ट से नीचे उतरकर पुनः वंदना की और पहुंचाने के लिए पूज्य प्रवर तत्पर बने। उस समय मैंने नम्र निवेदन कर गुरुदेव को पट्ट पर बिठाया और सारे संघ का आशीर्वाद लेकर द्रुत गति से आगे बढ़ता गया और दादर तेरापंथ भवन में पहुंचकर ही विश्राम लिया। मेरे आने की सूचना सुनकर साध्वी श्री ने मेरे स्वागत की तैयारी की। साध्वीश्री ने अपनी साध्वियों और पारिवारिक सदस्यों के साथ गीत गाया। वह गीत चंद समय में देश के कोने-कोने में पहुंच गया। भक्ति रस से भीगे गीत को सुनकर श्रोता अवाक् रह गये। शासनश्री जी अपनी वेदना को भूलकर लंबे समय तक व्हीलचेयर पर बैठकर अपनी कृतज्ञता गुरुदेव के प्रति, सारे संघ के प्रति और अपने सहोदर के प्रति प्रकट करती रही। दूसरे दिन प्रातः तीनों ही संत साध्वीश्री के सान्निध्य में पहुंचे, साध्वी श्री ने तीनों ही संतों को अपने हाथ से परोसा, उनकी खुशी का कोई पार नहीं था। दूसरे दिन ११:०० बजे तक साध्वीश्री व्हीलचेयर पर बैठी-बैठी सेवा कर रही थी मुझे लगा कि अभी सब कुछ ठीक सा प्रतीत हो रहा है। मैं साध्वी श्री से अनुमति लेकर मर्यादा महोत्सव के लिए पुनः श्री चरणों में वाशी पहुंच गया।

मर्यादा महोत्सव के पश्चात गुरुदेव ने मुनि मुकेशकुमारजी को वंदना करवायी। प्रथम बार न्यारां में चार संतों से मंगलपाठ सुनकर दादर के लिए प्रस्थान किया। पूज्य प्रवर ने फरमाया ज्यादा से ज्यादा समय सोमलता जी के सान्निध्य में लगायें। उन्हें चित्त समाधि पहुंचायें- सुनायें। मैं पूज्य प्रवर के अयाचित कृपा भाव को देखकर मेरे भाग्य की सराहना करने लगा मैंने ऋषभ मुनि से विहार का मुहूर्त मांगा, उनके बताये गये समय पर विहार कर दादर तेरापंथ भवन के पास वाली बिल्डिंग में ही उपाश्रय है हम वहां रुके, स्थान नजदीक और साताकारी मिला। पूज्य प्रवर की कृपा से दिन में २-३ बार जाता परंतु साध्वीश्री जी की शारीरिक शक्ति इतनी क्षीण हो चुकी थी कि उठना-बैठना, बोलना, खाना बिल्कुल बंद सा हो गया। उन्होंने लिख कर दिया कि अब तिविहार त्याग करावें। लंबे समय से सब प्रकार की मुंह से दवाई, ग्लूकोज बंद कर दिया था, केवल घाव पर जलन के कारण मरहम पट्टी करते। घाव की तीव्र वेदना असह्य देखकर मैंने कहां इन्जेक्शन लग सकता है? जिससे पीप सूख जाये जलन से राहत मिल सके। अंत में तीन दिन तक आपने चौविहार तप किया। संथारे में इंजेक्शन नहीं लगा सकते इसलिए संथारा नहीं करवाया। सभी साध्वियां-साध्वी शकुंतलाजी, संचितयशाजी, जागृतप्रभाजी, रक्षितयशाजी बड़ी ही जागरुकता, आत्मीयता से अपने मनोबल को बनाकर जप, स्वाध्याय के साथ त्याग प्रत्याख्यान करवा रही थी। संसार पक्षीय भाई जसकरण, विजय, भतीजा महेन्द्र भाभी लक्ष्मी, तारा भतीजी कांता भतीजे की बहू सुधा लंबे समय से सेवा कर रहे थे। शाम को गुलाब बाग से राजेन्द्र चोपड़ा जोड़े से तथा पोतियां डॉ. खुशबू, मुस्कान भी आ गये, सभी ने दर्शन किये। परंतु बात करने की स्थिति नहीं थी, रात्रि में अकस्मात महेन्द्र आया और कहने लगा आंखे खुल गयी और श्वास का वेग मंद हो रहा है, क्या संथारा पचखा दें? मैंने कहा अब देर मत करो। साध्वियों ने स्थिति को देखा और शासनश्री की भी यही मानसिकता प्रांरभ से थी कि मुझे अंत में संथारा करना है। उनकी आंतरिक भावना को देखकर रात्रि में २:५१ पर चारों ही साध्वियों ने चिंतन कर समाज व पारिवारिक जनों की उपस्थिति में साध्वीश्री शकुंतलाजी ने आजीवन तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। संथारे की बात चंद समय में फैल गयी। श्रावक-श्राविकाओं का दर्शनार्थ आने का तांता लग गया। पूज्य प्रवर को भी निवेदन करवा दिया गया। मैं सूर्योदय के समय संतों के साथ पहुंचा, साध्वीश्री प्रतिक्षारत थी, जाते ही उन्होंने पूर्ण सजग अवस्था में चौविहार संथारा पचखा मात्र ३६ मिनट में नमस्कार महामंत्र सुनते-सुनते अंतिम श्वास लिया। चारों साध्वियां, चारों संत व श्रावक - श्राविकाओं के मध्य इस नश्वर शरीर को छोड़कर सदा-सदा के लिए विदा हो गई। पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी की असीम कृपा से ही यह शुभसंयोग मिल सका। हम भाई-बहन सदा-सदा के लिए चिर ऋणी रहेंगे। महाप्रयाण के दिन दीक्षा प्रदाता महासती लाडांजी की पुण्यतिथि व महाशिवरात्रि के साथ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस था।

# 'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलता जी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्‌गार

## शासन रा कीर्तिधर जी

● साध्वी शकुन्तलाकुमारी ●
● साध्वी संचितयशा ●

शासनश्री ! सतिवर प्यारा, सोमलता जी हा न्यारा।
तोड़ तड़ाकै नेह कियां चाल्या प्यारा सतीवर जी।
शासन रा कीर्तिधर जी,
यादां थांरी आवै जी, जीवड़ों अकुलावै जी।।

वत्सलता री मूरत हा, ममता री प्रतिमूरत हा,
धोबां भर-भर लाड़ घणो वख्शाया प्यारा सतीवर जी।।

प्रवचन अमृत रो झरणो, पीकर भव सागर तरणो,
कर्मां री थे झीणी रैस बताया प्यारा सतीवर जी।।

कष्टां स्यूं क्यूं घबराणो, असाता में मुस्काणो,
हंसता-हंसता कर्मां नै थे काट्या प्यारा सतीवरजी।।

श्वासां री थमगी डोरी, बात आ तो नाजोरी,
काल बैरी क्यूं निजर कड़ी यूं करली प्यारा सतीवर जी।।

कांई खता हुई म्हां स्यूं , हाथ जोड़ पूछां थांस्यू,
एकर तो भूलां म्हांरी बताओ प्यारा सतीवर जी।।

तीनूं गुरु री महर मिली, सदा रूंआली रही खिली,
वरदहस्त री छत्र छांव थे पाया प्यारा सतीवर जी।।

उग्रविहारी ! कमल मुनि, तपोमूर्ति है महाधुनी,
श्रुतधर वीर पा हृदय कमल विकसायो प्यारा सतीवर जी।
संथारो करवा दायित्व निभाया, श्रुतधर मुनिवर जी ।।

शासन रा कीर्तिधरजी, साचो रतन पायो जी,
केसर सौरभ आवै जी।
यादां थांरी आवैजी, जीवड़ो अकुलावै जी।।

**लय: कल्पतरू रा बीज फल्या**

## बोलो जय जयकार है

● साध्वी राकेशकुमारी ●

शासनश्री साध्वी सोमलता की बोलो, जय जयकार है।
मुम्बई दादर की धरती पर, खोला शिवपुर द्वार है।।

गुरु आज्ञा से साध्वी प्रमुखा, लाडसति कर से दीक्षा।
तुलसी महाप्रज्ञ गुरु से तुमने, पाई अनमौली शिक्षा।
तीक्ष्ण बुद्धि जीवन का आधार है।।

भीतर बाहर एक जैसा साफ सुथरा था जीवन।
स्पष्टवादिता मिलन सारिता सद्‌गुण थे तव आभूषण।
संस्कारों से सुरभित जीवन गुलजार है।।

कुशल गायिका लेखिका वक्तृत्व कला व्यवहार कुशल ।
लघु भ्राता का सहयोग, पाया गुरुवर का सम्बल।
मनोरथ सफल हुआ साकार है।।

उग्रविहारी दीर्घतपस्वी कमलमुनि दौड़े आऐ।
भाई के दर्शन पाकर के, समाधिस्थ है बन पाये।
उमड़ा खुशियां का पारावार है।।

समाधिस्थ आत्मस्थ बनकर आत्मा से प्रीती जोड़ी।
मोह-माया का बंधन तोड़ा, अंतिम सांसे जब छोड़ी।
शकुन्तला ने पचक्खाया संथार है।।

बम्बई पावस, नन्दवन में महाश्रमण साया पाया।
मुख्यमुनि अरू साध्वीप्रमुखा साध्वी वर्या की छाया।
गण गणपति जीवनतंत्री आधार है।।
महाश्रमण जीवन नौका खेवनहार है।।

साध्वी शकुन्तला संचित जागृत रक्षित दृष्टि आराधी।
मनोयोग से जागरूक बन पल-पल है सेवा साधी।।
सबका सहयोग मिला सुखकार है।।
श्रावक समाज मुम्बई सुखकार है।।

**लय: खड़ी नीम के नीचे**

## जीवन को संवारा

● साध्वी कीर्तिलता ●

शासनश्रीजी सोमलताजी ने पचखा संथारा,
जीवन को संवारा।।

छोटी वय में दीक्षित होकर, संघ चमन में आए,
गंगाणे का बैद परिकर, अपने भाग्य सराए।
रतनलालजी केसर देवी, के कुल को उजारा।।

गुरु तुलसी व शासन माता, का सिर पर था साया,
अनुज सहोदर कमल मुनि का, उपकार नहीं विसराया।
साध्वी प्रमुखा लाडांजी से, संयम को स्वीकारा।।

कीर्ति शांति पूनम को भी योग मिला संग रहना,
जबरदस्त कर्मों का उदय, हंसते-हंसते सहना।
शकुंतला, संचित, जागृत, रक्षित का मिला सहारा।।

अंतिम वय में संथारा कर लक्षित मंजिल पाई,
कीर्ति शांति पूनम श्रेष्ठा देते तुम्हें बधाई।
मोहमयी मुम्बई नगरी में गुरु महाश्रमणजी बरतारा।।
शिवरात्री के दिन चार तीर्थ का, लगा नव्य नजारा।।

**लय: संयममय जीवन**

# पंख होते तो उड़कर मैं भी पहुंच जाती...

वि.सं. २०३९ आषाढ़ महीना का प्रारंभ, पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने साध्वी सोमलताजी के साथ मुझे भी याद किया, हम गुरु सन्निधि में पहुंचे। पूज्यवर ने साध्वी सोमलता जी का चतुर्मास सरदारपुरा तातेड़ गेस्ट हाऊस में घोषित किया। साध्वी सोमलता जी की सहयोगी साध्वी इंदिराजी, मैं (साध्वी शिवमाला), साध्वी लघिमा जी हम चार साध्वियां थी। प्रवचन कौशल, वाणी की कुशलता, श्रावक समाज में साध्वी सोमलताजी प्रति अपूर्व भक्ति। पारस ऋतु तपस्या की बहार, प्रत्येक तपस्वी के नाम का गीत बनाकर प्रोत्साहित करते। अनुरत्नाधिक होते हुए जो स्नेह, वात्सल्य मुझे दिया मैं सोचती हूं राम भक्त हनुमान जैसा नाता जुड़ गया। हनुमानजी ने सीना चीरकर राम को दिखा दिया, परन्तु मैं ऐसा करने में असमर्थ हूं।

**शायद ही ऐसा कोई दिन गया होगा, जो तुम्हारी याद के बिना जिया होगा।**

समय-समय पर जब मिलन होता तो कितना आत्मीय भाव, हितेषु, सम्यक् समाधान देते। मेरे मन में यह बात आती है कि यह साथ क्यों छूटा ? काश ! अन्तिम श्वास तक साथ रहकर सेवा कर पाती। असाध्य वेदना की वार्ता सुन बहुत अफसोस होता। जिस साध्वी की संघ को जरूरत, श्रावक समाज को जरूरत उनके तन में असाध्य वेदना क्यों ? इस वैज्ञानिक युग में मोबाइल के माध्यम से भाई बहिन का मिलन देखकर आह्लाद की अनुभूति हुई। गीत की पंक्ति ''बीरो साता पूछण आयो'' मेरे कानों में हर क्षण गूंजती है। सहयोगी साध्वियां अद्भूत सेवा कर निर्जरा में सहयोगी बनीं। अगर पंख होते तो उड़कर मैं भी साध्वी सोमलता जी के पास पहुंच जाती। हृदय में अनेक प्रकार की कल्पनाएं थी कि हैदराबाद चतुर्मास के बाद महाराष्ट्र की ओर जाएं और हमारा मिलन हो, सारी कल्पनाएं अधूरी रह गई।

साध्वी सोमलताजी का व्यक्तित्व ऐसा था कि जिस क्षेत्र में चतुर्मास किया, सफलतम सूची में रहा। भाई बहिनों के दिलों अपना स्थान बनाया। असाध्य वेदना को सहन करते-करते संथारा कर अपना कार्य सिद्ध किया।

– साध्वी शिवमाला, टमकोर

# उनका जाना रिक्तता की अनुभूति करा गया

'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी धर्म संघ की एक सुयोग्य साध्वी थी। वे कई विशेषताओं से सम्पन्न थी। वे कुशल वक्ता, मधुर गायिका और सरस रचनाकार थी। उनके द्वारा रचित गीत रूचिकर होते थे। आचार्यश्री की उन पर कृपा बरसती रही।

साध्वी सोमलता जी 'सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति' सप्तम साध्वी प्रमुखाश्री लाडांजी द्वारा बीदासर में दीक्षित अनन्य साध्वी थी। तपोमूर्ति उग्रविहारी मुनिश्री कमलकुमारजी एवं शासनश्री साध्वी सोमलता जी दोनों सगे भाई-बहिन युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के शासनकाल में दीक्षित हुए।

मुनिश्री कमलकुमारजी का दिल से दिल्ली से उग्रविहार सार्थक हो गया, सफल हो गया। मुम्बई (वाशी) मर्यादा महोत्सव पर गुरुदर्शन सान्निध्य का शानदार अवसर तो पाया ही, चिर-प्रतीक्षारत सहोदरी ज्येष्ठ भगिनी से साक्षात् मिलन का दृश्य भी अद्भुत था। अनुकंपावर्षी आचार्यश्री महाश्रमणजी का विशेष संदेश अपने सहोदर मुनिश्री द्वारा प्राप्त कर उन्हें कितनी खुशी हुई होगी, कितना आत्मबल बढ़ा होगा।

भगिनी सहोदरी साध्वीश्री की संयम यात्रा की सम्पन्नता के करीब उन्हें चौविहार अनशन करवाकर मुनिश्री कृतार्थ हो गए। मेरे साथ साध्वी सोमलताजी लगभग चार वर्ष रहे। अनुकूल समयोचित सहयोग किया। उनका जाना रिक्तता की अनुभूति करा गया। प्रकृति के शाश्वत नियम को टाला नहीं जा सकता। साध्वी सोमलता जी ने अपने साधना काल में धर्मसंघ की प्रभावना में जो विरल पृष्ठ जोड़े वे अनुकरणीय रहेंगे।

–'शासनश्री' साध्वी संघमित्रा

## रक्तदान शिविर के विविध आयोजन

### सूरत

तेरापंथ युवक परिषद् सूरत द्वारा विभिन्न ब्लड बैंक एवं एनजीओ के सहयोग से फरवरी माह में कुल ११ कैंप किए गए, जिसके अंदर कुल ४७७ ब्लड यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। सभी ब्लड कैंप में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद राष्ट्रीय संगठन मंत्री अमित सेठिया, राष्ट्रीय सहप्रभारी सौरभ पटवारी ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई और टीम द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की। साथ में गुजरात संभाग प्रभारी कुलदीप कोठारी, गुजरात एमबीबीडी प्रभारी अभिनंदन गदिया एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। अध्यक्ष सचिन चंडालिया द्वारा सभी कैंप स्थल आयोजकों का आभार ज्ञापन किया गया, और भविष्य में उनके साथ मिलकर बड़े स्तर पर कैंप करने की बात कही गई। मंत्री श्रेयांस सिरोहिया द्वारा सभी का सम्मान किया गया। टीम एमबीबीडी द्वारा भी विशेष श्रम किया गया और सारे कैंप की अच्छी व्यवस्था की गई।

### भादरा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा वर्ष २०२४ में एमबीडीडी आयाम के अंतर्गत एमबीडीडी रिदम कार्यक्रम के तहत तेरापंथ युवक परिषद् भादरा द्वारा विवेकानंद ब्लड बैंक की सहायता से ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के मेगा ब्लड डोनेशन आयाम के राष्ट्रीय सह प्रभारी सौरभ ने भी ब्लड डोनेट किया। कैंप में ४६ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। चुरू संसदीय सीट के भाजपा के प्रतिनिधि देवेंद्र झांझडिया ने भी ब्लड डोनेशन करने वालों की हौसला बढ़ाया। स्थानीय सभा एवं परिषद के साथियों ने उनका सम्मान किया। सिरसा से आभातेयुप साथी देवेंद्र डागा का भी विशेष सहयोग रहा।

## संक्षिप्त खबर

### महिलाओं हेतु स्वास्थ्य जांच शिविर

**राजाजीनगर।** तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में महिलाओं हेतु अष्ट दिवसीय फिट वूमेन सप्ताह - एटीडीसी क्वींस प्रोफाइल रियायती दर पर महिलाओं हेतु स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत संपूर्ण रक्त जांच, थाइरॉइड प्रोफाइल, कोलेस्ट्रॉल, कैल्शियम, मधुमेह, आयरन जैसे विभिन्न ४४ रक्त जांच समाविष्ट की गई। फिट वूमेन सप्ताह के तहत कुल १०० महिलाओं ने स्वास्थ्य जांच करवाई। स्थानीय लोगों ने मानव सेवा के इस महान उपक्रम की सराहना करते हुए एटीडीसी के प्रति आभार व्यक्त किया। शिविर के प्रायोजक के रूप में लक्ष्मीलाल, रोशनलाल, गणपतलाल कोठारी परिवार का सहयोग प्राप्त हुआ।तेयुप से कमलेश गन्ना, राजेश देरासरिया, कमलेश चौरड़िया, जयंतीलाल गांधी, ललित मुणोत, सुनील मेहता ने सेवाएं प्रदान की।

### नुक्कड़ नाटक का आयोजन

**मदुरै।** अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में महिला मंडल द्वारा सिग्नेचर विला अपार्टमेंट में नारी सशक्तिकरण पर नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। नुक्कड़ नाटिका द्वारा महिलाओं के विविध पहलुओं को दर्शाया गया। महिलाएं भौतिक ही नहीं आध्यात्मिक क्षेत्र में भी आगे बढ़ रही है। आज की नारी हर क्षेत्र में अपना परचम फैला रही है। घरेलू कामों से लेकर बच्चों के पोषण तक की सारी जिम्मेदारियां संभालती हैं। अध्यक्ष लता कोठारी ने नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत करने वाली बहिनों की प्रशंसा की।

## संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
## जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

### नामकरण संस्कार

**साउथ हावड़ा।** कालू निवासी विजयवाड़ा प्रवासी सुरेन्द्र-वीना गोलछा के सुपौत्र एवं अंकित-सीमा गोलछा के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से हुआ। संस्कारक बजरंग लाल डागा एवं पवन बेंगाणी ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया। पारिवारिक जनों ने बालक का नाम अर्नित रखा। परिषद् के सह मंत्री सुनीत नाहटा ने शिशु के मंगल भविष्य की मंगलकामना की।

### नूतन गृह प्रवेश

**पर्वत पाटीया।** लाडनूं निवासी पर्वत पाटीया (सूरत) प्रवासी स्नेहलता गजराज पगारिया के सुपुत्र एवं पुत्रवधु गौरव-रीना का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में जैन संस्कारक पवन बुच्चा व रवि मालू ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोचार सहित जैन संस्कार विधि से नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम करवाया गया।

## अणुव्रत अमृत महोत्सव सम्पूर्ति समारोह

# अणुव्रत एक संपूर्ण जीवन शैली

**टांलीगंज, कोलकाता।**

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत अमृत महोत्सव सम्पूर्ति समारोह का आयोजन साउथ सिटी इन्टरनेशनल स्कूल ओडिटोरियम टांलीगंज मे अणुव्रत समिति कोलकाता, अणुव्रत समिति हावड़ा व श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी तेरापंथी सभा टॉलीगंज द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाजसेवी विट्ठलदास मूंदड़ा, नेवटिया यूनिवर्सिटी के डीन सुशीलकुमार कोठारी, संस्कृत यूनिवर्सिटी एवं नवदीप यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर राजकुमार कोठारी, नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की एसिस्टेन्ट डायरेक्टर महक जैन एवं धनंजय सोम आदि गणमान्य व्यक्ति विशेष रूप से उपस्थित थे।

समारोह का विषय 'समस्याएं अनेक समाधान एकः अणुव्रत जीवन शैली' था। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- अणुव्रत एक आचार संहिता ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जीवन शैली है। यह एक अहिंसक और संयम प्रधान जीवन शैली है जो उपभोक्तावादी जीवन शैली की बेहतरीन विकल्प है। अणुव्रत जीवन शैली जहां व्यक्ति की नैतिक चेतना का जागरण कर स्व कल्याण का आधार तैयार करती है वहीं समाज और विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है। अणुव्रत जीवन का आधार और दर्शन है तथा जीवन की ऊंचाईयों तक पहुंचाने का माध्यम है। यह एक असाम्प्रदायिक आंदोलन है।

राष्ट्रसंत आचार्यश्री तुलसी इस आंदोलन के प्रणेता थे। वे मानवता के मसीहा थे उन्होंने अणुव्रत के माध्यम से जागृति का शंखनाद किया। अणुव्रत आंदोलन के जरिए उन्होंने लाखों व्यक्तियों को नशामुक्ति का संकल्प कराया अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के नेतृत्व में अणुव्रत आंदोलन के अमृत महोत्सव वर्ष का संपूर्ति समारोह देश भर में मनाया जा रहा है। अधिक से अधिक लोग अणुव्रत के संकल्पों को स्वीकार कर स्वस्थ समाज निर्माण के लिए संकल्पित बनें। जीवन में अहिंसा, प्रामाणिकता, सद्भावना, नैतिकता को अपनाएं। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा. विट्ठलदास मूंदड़ा ने कहा- अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों से जीवन को सुव्यवस्थित व सुसंस्कृत बनाया जा सकता है। इसलिए अणुव्रत को समझें और अपनाएं। सुशील कुमार कोठारी ने कहा- अणुव्रत गीत में दिया गया संदेश समाज के लिए महत्त्वपूर्ण है। भविष्य में आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए पुरानी सोच के साथ नई सोच को भी जोड़ना जरूरी है।

राजकुमार कोठारी ने कहा - समाज में शांति स्थापना बहुत जरूरी है। शांति, अहिंसा और सत्याग्रह से हम विजयी हो सकते है। जैन धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो दुनिया को सही रास्ता दिखा सकता है।

महक जैन ने कहा - नशा समाज की आत्मा को आहत करता है। प्रत्येक व्यक्ति को नशामुक्ति के लिए संकल्पित होना चाहिए। अणुव्रत आंदोलन से लाखों लोगों ने अवगुणों का त्याग किया है।

इस अवसर पर स्वागत भाषण अणुव्रत समिति कोलकाता के मंत्री नवीन दुगड़ ने दिया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा टालीगंज के अध्यक्ष अशोक पारख, साउथ सिटी से राजीव दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया।

## संबोधि

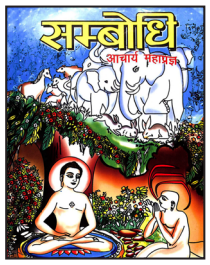


# साध्य-साधन-संज्ञान

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

**६. अस्ति कर्मफलं वेद्यं, न वा वेद्यं च विद्यते ।**
**एवं संशयमापन्नः, साध्यं प्रति न धावति ॥**

कर्म का फल भोगना पड़ता है या नहीं – इस प्रकार संदिग्ध रहने वाला व्यक्ति साध्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न नहीं करता ।

**७. अस्ति लोकोऽपि जीवोऽपि, कर्म कर्मफलं ध्रुवम् ।**
**एवं निश्चयमापन्नः, साध्यं प्रति प्रधावति ॥**

लोक है, जीव है, कर्म है और कर्मफल भुगतना पड़ता है–इस प्रकार जो आस्थावान् है, वह साध्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है।

साध्य का अधिकारी आस्थावान है, अनास्थावान नहीं। जो अनास्थावान है वह धर्म में प्रवृत्त भी नहीं हो सकता। धर्म में वही प्रवृत्त हो सकता है जो आस्थावान चाहता है कि मैं क्लेश से मुक्त बनूं, जन्म और मृत्यु का विजेता बनूं। मेरी आत्मा परमात्मा है। जब मेरे बंधन छूट जायेंगे तब मैं आत्म-स्वरूप में अवस्थित हो सकूंगा। भोग मेरा साध्य नहीं है, मेरा साध्य है योग। जीव, लोक, कर्म और कर्म-फल- ये आस्था के मूल सूत्र हैं। इनमें आस्था रखना प्रत्येक आस्तिक का कर्तव्य है।

**८. निरावृतिश्च निर्विघ्नो, निर्मोहो दृष्टिमानसौ ।**
**आत्मा स्यादिदमेवास्ति, साध्यमात्मविदां नृणाम् ॥**

आत्मविद्-आत्मा को जानने वाले पुरुषों के लिए निरावरण, निर्विघ्न-निरन्तराय, निर्मोह और दृष्टि सम्पन्न सम्यग्दर्शन युक्त आत्मा ही साध्य है।

अध्यात्म-द्रष्टा व्यक्तियों का साध्य आत्मा है। लेकिन वह शुद्ध आत्मा है, अशुद्ध नहीं। आत्मा की अशुद्धता वास्तविक नहीं है, वह कर्मजनित है, परकृत है। पर के जब संस्कार छूट जाते हैं तब आत्मा स्वरूप में स्थित हो जाती है। आत्मा का स्वरूप है अनंत ज्ञानमय, अनंत दर्शनमय, अनंत आनंदमय और अनंत सुखमय ।

**९. आवरणस्य विघ्नस्य, मोहस्य दृक्चरित्रयोः ।**
**निरोधो जायते तेन, संयमः साधनं भवेत् ॥**

संयम से आवरण, विघ्न, दृष्टिमोह और चारित्रमोह का निरोध होता है इसलिए वह आत्मा की प्राप्ति-साध्य की सिद्धि का साधन है।

अनंत ज्ञान, अनंत श्रद्धा, अनंत आनंद और अनंत शक्ति - यह आत्मा का मूल स्वभाव है। यह स्वभाव कर्म से तिरोहित - ढका रहता है। जब तक स्वभाव का अनावरण न हो तब तक आत्मा भ्रांत रहती है। वह पर–वस्तु को स्वकीय मान लेती है और स्व–वस्तु को परकीय। इसलिए यह अपेक्षित होता है कि यह आवरण हटे। प्रकाश के सद्भाव में तम की दीवार ढह जाती है। आवरण को हटाने की अपेक्षा प्रकाश को प्रकट करना जरूरी है। साधक आवरण हटाता नहीं। आवरण हटता है। वह स्वभाव को जागृत करता है। आवरण विलीन हो जाता है। स्वभाव जागरण की प्रक्रिया है संयम। संयम का अर्थ है– इन्द्रिय-विजय और मन–विजय। जब वह संयम अनुत्तर होता है, तब साध्य सिद्ध हो जाता है।

**१०. आत्मानं संयतं कृत्वा, सततं श्रद्धयान्वितः ।**
**आत्मानं साधयेच्छान्तः, साध्यं प्राप्नोति स ध्रुवम् ॥**

जो श्रद्धा संपन्न पुरुष अपने को संयमी बना आत्म-साधना करता है, वह शांत-कषायरहित पुरुष साध्य को प्राप्त होता है।

साध्य को प्राप्त करने के लिए तीन उपायों का अबलंबन लेना होता है - संयम, श्रद्धा और शम। श्रद्धा के अभाव में संयम का स्वीकार नहीं होता। संयम भौतिक सुख-सुविधा का त्याग है। वह तब ही होता है जब कि मन आत्मलीन होता है। संयम के द्वारा मानसिक, वाचिक और कायिक क्रियाएं नियंत्रित हो जाती हैं। शम संयम से भिन्न नहीं है। शम का अर्थ है - कषाय- विजय, लेकिन साधना के प्राग् अभ्यास के लिए पृथक् रूप से उल्लेख किया है, जिससे कि साधक सतत सावधान रहे कि मुझे कषाय-विजयी होना है।

(क्रमशः)

## श्रमण महावीर

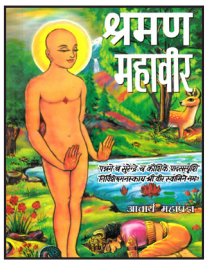


# स्वतन्त्रता का अभियान

(पिछला शेष)

'भैया! अन्तिम निर्णय सही है कि आप मेरे मार्ग में अवरोध न बनें,' कुमार ने बड़ी तत्परता से कहा।

नंदिनवर्द्धन बोले, 'कुमार! यह कथमपि सम्भव नहीं है। मैं जानता हूं कि तुम्हारी अहिंसा तुम्हें घाव पर नमक डालने की अनुमति तो नहीं देगी।'

नंदिवर्द्धन ने इतना कहा कि कुमार विवश हो गए।

'मुझे निष्क्रमण करना है। इसमें मैं परिवर्तन नहीं ला सकता। मैं महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक यात्रा प्रारम्भ कर रहा हूं। इस कार्य में मुझे सहयोग चाहिए। फिर आप मुझे क्यों रोकना चाहते हैं? कुमार ने एक ही सांस में सारी बातें कह डालीं।' नंदिवर्द्धन जानते थे कि कुमार सदा के लिए यहां रुकने वाला नहीं है, इसलिए असम्भव आग्रह करने से कोई लाभ नहीं। उन्होंने कहा, कुमार! मैं तुम्हें रोकना चाहता हूं पर सदा के लिए नहीं।'

'फिर कब तक?'

'मैं चाहता हूं तुम माता-पिता के शोक-समापन तक यहां रहो, फिर अभिनिष्क्रमण कर लेना।'

'शोक कब तक मनाया जाएगा?'

'दो वर्ष तक।'[1]

'बहुत लम्बी अवधि है।'

'कुछ भी हो, इसे मान्य करना ही होगा।'

सुपार्श्व भी नंदिवर्द्धन के पक्ष का समर्थन करने लगे। कुमार ने देखा, अब कोई चारा नहीं है। इसे मानना पड़ेगा पर मैं अपने ढंग से मानूंगा। कुमार ने कहा, 'एक शर्त पर में आपकी बात मान सकता हूं।' 'वह क्या है,' दोनों एक साथ बोल उठे।

'घर में रहकर मुझे साधक का जीवन जीने की पूर्ण स्वतंत्रता हो तो मैं दो वर्ष तक यहां रह सकता हूं, अन्यथा नहीं।'

उन्होंने कुमार की शर्त मान ली। कुमार ने उनकी बात को अपनी स्वीकृति दे दी। अभिनिष्क्रमण की चर्चा पर एक बार पटाक्षेप हो गया।

### विदेह–साधना

कुमार वर्द्धमान के अंतस् में स्वतंत्रता की लौ प्रदीप्त हो चुकी थी। वह इतनी उद्दाम थी कि ऐश्वर्य की हवा का प्रखर झोंका भी उसे बुझा नहीं पा रहा था। कुमार घर की दीवारों में बन्द रहकर भी मन की दीवारों का अतिक्रमण करने लगे। किसी वस्तु में बद्ध रहकर जीने का अर्थ उनकी दृष्टि में था स्वतंत्रता का हनन। उन्होंने स्वतंत्रता की साधना के तीन आयाम एक साथ खोल दिए–एक था अहिंसा, दूसरा सत्य और तीसरा ब्रह्मचर्य।

अहिंसा की साधना के लिए उन्होंने मैत्री का विकास किया। उनसे सूक्ष्म जीवों की हिंसा भी असम्भव हो गई। वे न तो सजीव अन्न खाते, न सजीव पानी पीते और न रात्रि-भोजन करते।

सत्य की साधना के लिए वे ध्यान और भावना का अभ्यास करने लगे। मैं अकेला हूं- इस भावना के द्वारा उन्होंने अनासक्ति को साधा और उसके द्वारा आत्मा की उपलब्धि का द्वार खोला।[2]

ब्रह्मचर्य की साधना के लिए उन्होंने अस्वाद का अभ्यास किया। आहार के सम्बन्ध में उन्होंने विविध प्रयोग किए। फलस्वरूप सरस और नीरस भोजन में उनका समत्व सिद्ध हो गया।[3]

कुमार ने शरीर के ममत्व से मुक्ति पा ली। अब्रह्मचर्य की आग अपने आप बुझ गई। कुमार की यह जीवनचर्या राजपरिवार को पसन्द नहीं थी। कभी-कभी सुपार्श्व और नंदिवर्द्धन कुमार की साधक-चर्या का हलका-सा विरोध करते। पर कुमार पहले ही अपनी स्वतंत्रता का वचन ले चुके थे।

काल का चक्र अविराम गति से घूमता है। आकांक्षा की पूर्ति के क्षणों में हमें लगता है, वह जल्दी घूम गया। उसकी पूर्ति की प्रतीक्षा के क्षणों में हमें लगता है, वह कहीं रुक गया। महावीर को दो वर्ष का काल बहुत लम्बा लगा। आखिर लक्ष्यपूर्ति की घड़ी आ गयी। स्वतंत्रता सेनानी के पैर परतंत्रता के निदान की खोज में आगे बढ़ गए।[4]

(क्रमशः)

# धर्म है उत्कृष्ट मंगल

**-आचार्यश्री महाश्रमण**

## सत्य शोध का यात्रा पथ

महारानी अपराजिता, जिसने राम जैसे महापुरुष को जन्म दिया, के जीवन में भी एक बार अविचारित निर्णय का अवसर आया। विशेष उत्सव के अवसर पर महाराज दशरथ ने अपनी रानियों के पास मंगल जलपूर्ण कलश भेजे। अन्य रानियों को वे कलश प्राप्त हो गए, किन्तु महारानी अपराजिता के पास मंगल कलश नहीं पहुंचा। महारानी ने सोचा-महाराज मेरे से अप्रसन्न हैं, इसीलिए मेरे साथ ऐसा अपमान पूर्ण व्यवहार किया गया है। अन्यथा सबसे पहले ससम्मान मेरे पास कलश पहुंचता। अपने ही द्वारा कल्पित अपमान से संत्रस्त होकर महारानी ने आत्महत्या करने का निर्णय कर लिया और उसकी तैयारी भी कर ली। इतने में ही महाराज का वहां आगमन हो गया। उन्होंने महारानी को वैसा करने से रोका और इसका कारण पूछा। महारानी ने अपने मन की व्यथा-कथा सुनाई। उसी समय मंगल कलश लिए 'खोजा' वहां पहुंचा और कलश महारानी को उपहत किया। महारानी का मन शान्त हुआ। देरी का कारण पूछने पर खोजा बोला–महाराज! अन्य रानियों के लिए तो आपने दासियों को भेजा। वे युवतियां थीं, अतः शीघ्र पहुंच गई। मैं तो वृद्ध हूं खांसता-खांसता और थूकता-थूकता धीमे-धीमे चलकर यहां आया हूं। महाराज ने कहा- देखा महारानी! तुम्हारे सम्मान के लिए मैंने खोजे के साथ मंगल कलश भेजा है। अपराजिता गद्‌गद् हो गई और अचिन्तित निर्णय के लिए अनुताप करने लगी।

सत्य-शोध का यात्रापथ लम्बा होता है। अनेकानेक जन्म इस पथ को काटने में लग सकते हैं। इस यात्रा की सम्पन्नता के बाद निष्पत्ति-स्वरूप मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस प्रलम्ब यात्रा-मार्ग के मुख्य-मुख्य स्थान हैं-

१- जीव और अजीव का अवबोध
२- सब जीवों की बहुविध गति का ज्ञान
३- पुण्य-पाप और बन्ध-मोक्ष का ज्ञान
४- भोग-विरक्ति
५- आभ्यन्तर और बाह्य संयोग का परित्याग
६- अनगार वृत्ति का स्वीकरण
७- उत्कृष्ट संवर को साधना
८- केवलज्ञान केवल-दर्शन की प्राप्ति
९- योग निरोध
१०- मोक्षावस्थान-यात्रा की सम्पन्नता

मोक्ष का मार्ग है सम्यग् दर्शन, सम्यगूज्ञान और सम्यक् चारित्र की आराधनात– **'सम्यग दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः।'** तप को चारित्र के अन्तर्गत लिया जाए तो त्रयी और उसकी अलग विवक्षा की जाए तो दर्शन, ज्ञान, चरित्र व तप-यह चतुष्टयी मोक्षमार्ग है। अकेला ज्ञान और अकेली क्रिया अपने आप में अपूर्ण हैं, पूर्ण मार्ग नहीं है, ज्ञान और क्रिया की युति व समन्वय मोक्ष-मार्ग बनता है। दो शब्दों में ज्ञान और चारित्र को मोक्ष-मार्ग कहा जा सकता है।

सम्यग् दर्शन के लिए अनन्तानुबन्धी कषाय और दर्शन मोहनीय कर्म का विलय अपेक्षित रहता है।

**मेरे ही मन में यहां एक प्रश्न उत्पन्न हुआ। वह यह कि सम्यक् दर्शन को प्राप्ति के लिए दर्शन मोहनीय का विलय होना अपेक्षित है, यह बात संगत है। परन्तु सम्यग् दर्शन के लिए अनन्तानुबन्धी कषाय, जो कि चरित्र मोहनीय की एक चतुष्टयी (क्रोध, मान, माया, लोभ) है, का भी विलय आवश्यक है, यह क्यों?**

दर्शन मोहनीय का स्वतन्त्र विभाग है जिसका संबंध दर्शन से है। चरित्र मोहनीय का भी स्वतंत्र विभाग है, जिसका संबंध चरित्र से है। अपना-अपना अलग-अलग विभाग है फिर सम्यग् दर्शन को अनन्तानुबंधी कषाय (चारित्र मोहनीय) के विलय की अपेक्षा क्यों रहे? मात्र दर्शन मोह के विलय से ही सम्यग् दर्शन की निष्पत्ति होनी चाहिए। यह प्रश्न स्वयं मुझे संगत प्रतीत हो रहा है।

परम पूज्य गुरुवर के श्री चरणों में बैठकर की गई जिज्ञासा के उत्तर से संपुष्ट बना मेरा ही चिन्तन मुझे समाधान दे गया कि मोहनीय कर्म का प्राण है कषाय (क्रोध, मान, माया और लोभ)। इसी पर आधारित है पूरा मोहनीय कर्म। यदि यह कषाय न रहे तो फिर मोहनीय कर्म का कुछ नहीं बचेगा। दर्शन और चारित्र दोनों का ही संबंध इस कषाय से है। दर्शन और चरित्र हमें दो अलग-अलग रूप में दिखाई दे रहे हैं और दो हैं भी। परन्तु कहीं जाकर ये दोनों एक हो जाते हैं अथवा दोनों एक-दूसरे पर पूर्णतया आधारित हो जाते हैं, दोनों मल्या हो जाते हैं। प्रत्येक जीव में दर्शन मोहनीय और चरित्र मोहनीय का न्यूनतम क्षयोपशम तो रहता ही है, अधिकतम विलय हो तो क्षय तक हो जाता है। ऐसा कोई जीव नहीं जिसमें दर्शन मोहनीय का क्षयोपशम तो हो और चारित्र मोहनीय का न हो अथवा चारित्र मोहनीय का क्षयोपशम तो हो और दर्शन मोहनीय का विलय किंचित् मात्रा में भी न हो।

(क्रमशः)

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

### आचार्यश्री भारीमालजी युग

**मुनिश्री वर्धमान जी 'छोटा' (केलवा) दीक्षा क्रमांक : ६७**

मुनिश्री बड़े तपस्वी थे। आपने उपवास से पंचोले तक थोकडे अनेक बार किये। आठ और पन्द्रह दिन का तप किया, ऐसा ख्यात में उल्लेख है। बड़े तप का विवरण इस प्रकार है– मासखमण ६ बार, ४३ एक बार, १०४ एक बार, ये सब पानी के आगार से किये। ढाई मासी एकबार, छः मासी एक बार आछ के आगार से किये। मुनिश्री शीतकाल में रात्रि के समय तथा एक प्रहर दिन चढ़ने तक पछेवड़ी नहीं रखते । ग्रीष्मकाल में आतापना लेते।

**– साभार: शासन समुद्र –**

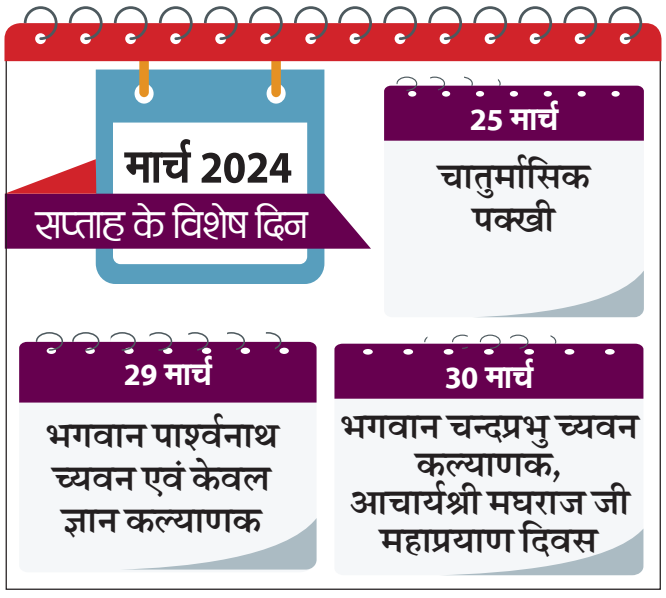


## अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

**निवेदक**
**अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स**

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

## प्रेरणा सम्मान समारोह

# नारी है प्रेरणा एवं संस्कारों की दीपशिखा

**नोएडा।**

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में नोएडा में बोथरा निवास स्थान पर तेरापंथ महिला मंडल नोएडा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नारी सशक्तिकरण के अन्तर्गत प्रेरणा सम्मान समारोह में राजनीति में सक्रिय बहिन डॉ. आरती कोचर को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा दुनिया में शक्ति, सम्पदा एवं सुमति का अत्यधिक महत्व है। इन तीनों की अधिष्ठात्री देवियां नारी हैं, जिन्हें हम दुर्गा, लक्ष्मी एवं सरस्वती कहते हैं। हर महिला में दुर्गा, लक्ष्मी एवं सरस्वती विराजमान है। आज महिलाओं ने अपनी शक्ति का परचम लहराया है। गृहिणी आज रसोई घर से निकलकर धरती से आगे बढ़कर अन्तरिक्ष में पहुंचकर अपने कामयाबी की कहानी कह रही है। विकास अच्छा है, प्रगतिपथ पर कदम बढ़ाना अच्छा है किन्तु संस्कारों के साथ होने वाला विकास शोभायमान होता है।

महिला अपने धरातल को मजबूत रखे। स्वयं संस्कारवान बनकर अपने बच्चों को एवं परिवार में अपने जीवन से संस्कारों की तालीम दे।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा- वही व्यक्ति समाज के लिए प्रेरणा बनता है, जो अपनी सोच को सकारात्मक एवं ऊंची रखता है। जो अपनी शक्ति का उपयोग सृजन में करता है। साध्वी समत्वयशाजी ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी मैत्री प्रभाजी ने मंच संचालन करते हुए कहा- महिला में वो शक्ति है, जिसकी बदौलत परिवार प्रगति के प्रांशु शिखरों पर आरूढ़ हो सकता है।

महिला मंडल अध्यक्षा सुमन सिपानी, अ.भा.ते.म.मं. से मंजू भूतोड़िया, अर्चना भंडारी, महासभा संरक्षक बजरंगजी बोथरा, दिल्ली सभा उपाध्यक्ष लक्ष्मीपत बोथरा, तेयुप अध्यक्ष कनिष्क बैद, टीपीएफ अध्यक्ष प्रसन्न सुराणा, सभाध्यक्ष रणधीर बैद, विकास जैन ने अपने विचार रखे।

डॉ. आरती कोचर ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मंगल संगान महिलामंडल की बहनों ने प्रस्तुत किया। महिलाओं पर एक सुन्दर नाटिका का मंचन बहनों द्वारा किया गया।

# मंगल भावना समारोह आयोजित

**गंगाशहर।**

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' के मंगल विहार से पूर्व उनके विदाई समारोह का आयोजन मंगल भावना समारोह के रूप में किया गया।

इस अवसर पर मुनि श्रेयांश कुमार जी ने कहा कि मुनि चैतन्य कुमार जी का लगभग १ वर्ष पूर्व गंगाशहर आगमन हुआ। आपका चातुर्मास भीनासर में हुआ, परंतु शेष प्रवास गंगाशहर में ही हुआ। मुनिश्री चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने अपने उद्बोधन में कहा कि साधुओं के लिए विहार चर्या को प्रशस्त माना गया है। जैन परंपरा के अनुसार साधु नवकल्पी विहारी होता है।

उन्होंने कहा कि गंगाशहर ऐसा क्षेत्र है जहां चार तीर्थ के रूप में साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका विद्यमान हैं। धर्म संघ के प्रति श्रावक श्राविकाओं की भावना अपूर्व है। मुनि विमल विहारी जी ने अपने प्रसंग सुनाते हुए मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। मुनि प्रबोध कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ चैनरूप छाजेड़ ने मंगलाचरण से किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेरापंथ न्यास के ट्रस्टी लूणकरण छाजेड़, महिला मंडल अध्यक्ष संजू लालाणी, युवक परिषद अध्यक्ष अरुण नाहटा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष भंवरलाल सेठिया, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी जयेश छाजेड़, वरिष्ठ उपासक निर्मल नौलखा, प्रकाश बाफना, निर्मल बैद ने मुनिश्री की मंगल भावना में अपने विचारों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का सफल संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री रतनलाल छलाणी ने किया।

# अणुव्रत अमृत महोत्सव संपूर्ति समारोह का आयोजन

**बेंगलुरु।**

अणुव्रत अमृत महोत्सव की संपूर्णता के उपलक्ष्य में अणुव्रत विश्वभारती सोसाइटी द्वारा द्वि दिवसीय 'अणुव्रत अमृत महोत्सव संपूर्ति समारोह' का आयोजन किया गया। अणुव्रत समिति, बेंगलुरु द्वारा प्रथम दिवसीय कार्यक्रम ईटीए स्टार द गार्डन अपार्टमेंट में स्थित श्री वर्धमान जैन स्थानक में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीतिका से प्रारंभ हुआ। अध्यक्ष देवराज रायसोनी ने सभी का स्वागत करते हुए कहा- अणुव्रत आंदोलन किसी जाति, धर्म या संप्रदाय का न होकर मानव मात्र की भलाई का अभियान है, जिसका मुख्य उद्देश्य नशामुक्ति, साम्प्रदायिक सौहार्द, पर्यावरण की सुरक्षा, धार्मिक सहिष्णुता एवं सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन है। आज के मुख्य वक्ता उपासिका शांति सकलेचा ने आचार्यश्री तुलसी द्वारा संस्थापित अणुव्रत आंदोलन पर प्रकाश डालते हुए छोटे-छोटे उदाहरण एवं कहानी द्वारा अणुव्रत के नियम पालन करने की उपयोगिता से अवगत करवाया।

समिति के पूर्व अध्यक्ष कन्हैयालाल चिप्पड़ ने भी अपने विचार रखें। समिति द्वारा आचार्यश्री तुलसी के जीवन पर आधारित लघु वीडियो को प्रसारित किया। कार्यक्रम की सुचारू व्यवस्था प्रचार प्रसार मंत्री व संयोजक रमेश दक ने की। मंत्री हरकचंद ओस्तवाल ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष मानकचंद संचेती ने किया ।

## परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा

# वर्ष २०२४ हेतु नवीन घोषित चातुर्मास

मुनि देवेंद्र कुमार जी एवं मुनि पृथ्वीराज जी : भिवानी
मुनि अर्हत् कुमार जी : नागपुर
साध्वी लब्धिश्री जी : उज्जैन
साध्वी प्रमोदश्री जी : सरदारपुरा, जोधपुर
साध्वी तिलकश्री जी : जिंद, हरियाणा
साध्वी सुदर्शनाश्री जी : पीलीबंगा
साध्वी शकुंतलाकुमारी जी : विलेपार्ले, मुंबई

# अभिवंदना के स्वरों में एक स्वर आपका भी

युगप्रधान शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर करें अपने लेखन से अभिवंदना

**परम पूज्य युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के**

**५०वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता, ६३वें जन्म दिवस, १५वें पदाभिषेक दिवस**

**के उपलक्ष में वंदनीय चारित्रात्माओं एवं पाठक गणों की स्वरचित रचनाएं सादर आमंत्रित है।**

- आप अपनी रचना आलेख (अधिकतम ३०० शब्द) / कविता (अधिकतम १५ पंक्ति) / गीत (अधिकतम ५ पद्य/१५ पंक्ति) / स्केच के रुप में भिजवा सकते हैं।
- कृपया एक व्यक्ति एक ही रचना भिजवाए।
- आप अपनी रचना टाइप करवा कर या पीडीएफ फॉर्मेट में १५ अप्रैल २०२४ तक **abtyptt@gmail.com** पर ईमेल करवा सकते हैं।
- प्रकाशन का सर्वाधिकार संपादक के पास सुरक्षित रहेगा।

:: निवेदक ::

**अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स**

अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

तेरापंथ टाइम्स **ऑनलाईन पढ़ने के लिए** terapanthtimes.com

❖ जिसे तुम अपना मित्र बनाते हो, उसके साथ सच्चा हार्दिक संबंध कायम करो।
परस्पर एक-दूसरे का हित करने का संकल्प करो।।

-आचार्य श्री महाश्रमण

# तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन

## इचलकरंजी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल इचलकरंजी द्वारा अवाड़े नगर में नारी सशक्तिकरण पर एक नुक्कड़ नाटक के माध्यम से प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम की शुरुआत प्रेरणा गीत के संगान से की गई। महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से नारी के विभिन्न स्वरूपों को बहुत सुंदर तरीके से प्रदर्शित किया गया। अध्यक्ष शिल्पा बाफना ने आभार ज्ञापन करते हुए नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति देने वाली बहनों को धन्यवाद दिया। महिला मंडल से ९ बहनों और कन्या मंडल ने नुक्कड़ नाटिका में भाग लिया। कार्यक्रम में कुल १५० महिलाएं एवं पुरुषों की भी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री मीना भंसाली ने किया।

## कांटाबांजी, उड़ीसा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल कांटाबांजी द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में अंतराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। महिला मंडल की अध्यक्षा आशा जैन ने सभी का स्वागत करते हुए महिला दिवस पर अपने विचार रखे, जिसमे उन्होंने नारी का सम्मान करने और नारी को उड़ान भरने के साथ संस्कारों को न भूलने पर जोर दिया। साथ ही नारीलोक पत्रिका पढ़ने और सभी कार्यक्रम में जागरूकता लाने की बात कही। इस अवसर पर ममता जैन ने नुक्कड़ नाटक के बारे में विस्तार से समझाया। शाखा की अन्य सदस्याओं ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में गुरुदेव को समर्पित कविता पाठ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें ७ बहनों ने भाग लेकर स्वरचित कविताओं का पठन किया। कार्यक्रम में ६ बहिनों स्मिता जैन, बॉबी जैन, सपना जैन, ममता जैन, वंदना अग्रवाल और मनीषा जैन को उनके शैक्षणिक योग्यताओं के लिए वरिष्ठ सलाहकार गोमती जैन और शकुंतला जैन द्वारा प्रेरणा सम्मान पत्र दिया गया। नुक्कड़ नाटिका के अन्तर्गत ३ विषयों पर महिला मण्डल ने सार्वजनिक स्थानों पर नुक्कड़ नाटिका की प्रस्तुति दी थी उन्हीं का मंचन आज के कार्यक्रम में भी प्रस्तुत किया गया। अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन की सचिव मोनिका गुप्ता, प्रगति शाखा की अध्यक्षा रेणु अग्रवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की सचिव ऋतु जैन और वंदना अग्रवाल ने आभार ज्ञापन किया।

## जयपुर

'शासनगौरव' साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में राजस्थान की माननीया उपमुख्यमंत्री दियाकुमारी जी के विशिष्ट आतिथ्य में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर जैन श्वतेतांबर तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर की ओर से मालवीय नगर स्थित अणुविभा केंद्र में एंपावरमेंट वूमेनहुड कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उपमुख्यमंत्री दियाकुमारी ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा- नारी का सम्मान करना हमारे देश की सदियों पुरानी परंपरा है। देश का विकास महिलाओं के विकास के बिना संभव नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में महिलाओं के विकास हेतु अनेक निर्णय लिए गए हैं। महिलाओं की प्रगति में सहयोगी योजनाएं व कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। उन्होंने कार्यक्रम में सान्निध्य प्रदान कर रहीं साध्वीजी का अभिनंदन किया। तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री नीलिमा बैद ने दीयाकुमारी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व का परिचय दिया। इस अवसर पर साध्वी कनकश्री जी ने अपने संबोधन में कहा कि यह गौरव का विषय है दियाकुमारी जी जैसी महिला प्रतिभा उपमुख्यमंत्री के रूप में राजस्थान राज्य की सेवा समर्पित भाव से कर रही हैं। महात्मा गांधी ने भी कहा था कि महिलाओं की लीडरशिप जहां होती है, वह सफल होती है। महिलाओं में लीडरशिप की अद्भूत क्षमता है। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू भी एक महिला हैं। अपेक्षा है महिलाएं अपनी अगली पीढी को शिक्षित और संस्कारी बनाकर राष्ट्र निर्माण के लिए कार्य करें। महिलाओं की बहुआयामी प्रतिभा और क्षमताओं का जिक्र करते हुए साध्वीश्री ने कहा- आज वे हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं और सफलता का परचम फहरा रही हैं।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने तेरापंथ महिला मंडल की बहुआयामी प्रवृत्तियों की जानकारी दी और कहा कि पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए 'प्लास्टिक रिसाइकिल मशीन' का वितरण किया जा रहा है। साथ में महिलाओं को रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए सिलाई मशीन, आटा चक्की तथा रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने वाले उपकरण भी उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति हुई। महिलाओं ने महिला जागृति और प्रेरणा गीत की प्रस्तुति दी। महिला सशक्तीकरण का एक भव्य नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय लखेसरा सांगानेर सिटी, जयपुर की प्रधानाचार्य रीटा कोठारी को तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर की ओर से प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया। तेरापंथ महिला मंडल जयपुर की अध्यक्षा नीरु मेहता ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। मंत्री नीलिमा बैद ने आभार ज्ञापन किया। प्रेम निकेतन स्कूल वाइस प्रेसीडेंट आशा नीलू टाक, वासुपूज्य महिला मंडल अध्यक्ष मधु बोरड, पार्श्व पद्मावती स्नात्र महिला मंडल अध्यक्ष रेखा जैन, मेट्रो जेएजी संगिनी ग्रुप की सेक्रेटरी रेखा पाटनी, नारी कभी न हारी संस्था की संस्थापक वीणा चौहान, अनिला कोठारी आदि की विशेष उपस्थिति रही।

## टिटिलागढ़

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल टिटिलागढ़ ने पूरे उत्साह एवं उमंग के साथ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। महिला मंडल ने प्रेरणा गीत का संगान किया। महिला मंडल की अध्यक्षा बबीता जैन ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि महिला दिवस मनाने का उद्देश्य है कि महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाए। आज के कार्यक्रम की मुख्य वक्ता ब्रह्मकुमारी मनीषा ने कहा देश को सशक्त बनाने के लिए नारी का सशक्त होना अत्यंत आवश्यक है, इसके लिए हमें एक दूसरे का सहयोग एवं सम्मान करना चाहिए। आज हर नारी अपने आप को बदलने का संकल्प ले। इस अवसर पर स्थानीय नगर पालिका अध्यक्ष जुझारू एवं सेवाभावी नेता ममता जैन को प्रेरणा सम्मान से अध्यक्षा बॉबी जैन ने सम्मानित किया।

इस अवसर पर ममता जैन ने अपने विचार रखते हुए कहा कि मुझे गर्व है कि मैं एक नारी हूं और मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि आज बहिनें हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। टिटलागढ़ तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर "नारी एक रूप अनेक" नाटक प्रस्तुत किया गया। महिला दिवस के कार्यक्रम में भी बहिनों ने इस नाटक की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता ब्रह्माकुमारी मनीषा का सम्मान किया गया। रिमझिम जैन को विशेष सहयोग देने के लिए पुरस्कृत किया गया। आज के इस भव्य कार्यक्रम में मारवाड़ी महिला समिति एवं प्रगति शाखा की बहने भी उपस्थित थी। कार्यक्रम का कुशल संचालन खुशबू जैन ने किया।

## सुजानगढ़

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार सुजानगढ़ तेरापंथ महिला मंडल ने नारी सशक्तिकरण पर नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति भूतोडिया चौक पर दी। 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी एवं साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। स्थानीय अध्यक्ष राजकुमारी भूतोड़िया ने सबका स्वागत करते हुए महिला दिवस की बधाई दी। मंडल की बहिनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। महिला मंडल व कन्या मंडल ने नारी सशक्तिकरण पर लघु नाटिका के द्वारा प्रस्तुति दी। विशिष्ट अतिथियों का साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। प्रतिपक्ष नेता जयश्री दाधीच ने बहुत ही सुंदर तरीके से महिला सशक्तिकरण के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। साध्वी मनीषाश्री जी ने बताया कि नारी सशक्तिकरण यानी महिलाओं में आध्यात्मिक, राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक शक्ति में वृद्धि करना है। तत्पश्चात गोपालपुर सरपंच एडवोकेट सविता राठी ने महिलाओं को जागरुक करते हुए बताया कि हम महिलाएं भी किसी से कम नहीं हैं। धर्म और कर्म के साथ-साथ हमें अपने संस्कारों के साथ भी जुड़े रहना चाहिए। साध्वी संघप्रभा जी ने बड़े ही रोचक तरीके से महिला सशक्तिकरण को समझाया। महिला दिवस पर डॉक्टर जयश्री सेठिया को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ जयश्री सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री डॉ पूजा फूलफगर एवं आभार ज्ञापन उपमंत्री निशा डोसी ने किया।

## साउथ दिल्ली

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार अंतरराष्ट्रीय महिला-दिवस के उपलक्ष्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल, साउथ दिल्ली द्वारा नुक्कड नाटक का आयोजन किया गया। अध्यक्षा शिल्पा बैद ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। नुक्कड नाटक का कार्यक्रम दिल्ली के बहु चर्चित स्थल दिल्ली हाट (आईएनए) में आयोजित किया गया। नुक्कड़ नाटक का शीर्षक 'नारी एक : रूप अनेक' था। आज की सशक्त, सफल और सदैव समर्पित नारी के चरित्र का चित्रण इस नाटिका के माध्यम से किया गया। मण्डल के सदस्यों के साथ-साथ परिवार और मित्रगण समेत लगभग ४० महिलाओं ने केसरिया परिधान में दिल्ली हाट के परिसर में मौजूद अनेक पर्यटकों व स्थानीय सैलानियों को अपनी नाटिका के द्वारा रोचक व महत्वपूर्ण सन्देश संप्रेषित किया। नुक्कड़ नाटक को नारी गीत की पंक्तियां गाकर विराम दिया। गीत के बोल अपने आप में नारी की सम्पूर्ण छवि को समाहित करने वाले हैं। अंत में मंत्री वर्षा द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया गया। इस कार्यक्रम की संयोजना में संजय जैन और संयोजिका रचना जैन और कृष्णा जैन का विशेष सहयोग रहा।

## बीदासर

समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशाजी के सान्निध्य में अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर बीदासर महिला मंडल के तत्वाधान में कार्यक्रम आयोजित हुआ। मंगलाचरण में मंडल की बहिनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। मंजू बोथरा ने अध्यक्षीय वक्तव्य में नारी के बलिदानों व समाज में योगदानों की चर्चा की। मुख्य अतिथि के रूप में समागत डॉ. प्रेरणा जैन ने कहा- नारी समाज के विकास में आचार्य तुलसी का बहुत बड़ा योगदान रहा। आज की नारी शिक्षा, संस्कृति, प्रतिभा, सम्पदा, कार्पोरेट आदि क्षेत्र में आगे बढ़ गयी है। इस अवसर पर महिला मंडल ने शांति देवी बांठिया की सामाजिक एवं धार्मिक सेवाओं का अंकन करते हुए 'प्रेरणा सम्मान' से सम्मानित किया।

(शेष पृष्ठ १० पर)

# तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन

शांति देवी बांठिया ने अपने वक्तव्य में समाज व मंडल के प्रति इस सम्मान हेतु आभार ज्ञापन किया। साध्वी कार्तिकयशाजी ने इस अवसर पर कहा- भारतीय संस्कृति में नारी का सम्मानपूर्ण स्थान रहा है। नारी घर, परिवार, समाज और राष्ट्र की आधार शिला है। साध्वी अमितप्रभाजी ने कहा- मां संस्कारदात्री होती है। नारी से लोक की व्यवस्था संचालित होती है। साध्वी कुलप्रभाजी, भारती संचेती, कन्यामंडल उपसंयोजिका दिव्या दुगड़ ने सामूहिक गीत संगान से अपनी भावना प्रस्तुत की। कार्यक्रम के अंत में कोषाध्यक्ष अलका बांठिया ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन एकता बैंगानी ने किया।

## कोयंबटूर

महिला सशक्तिकरण पर नुक्कड़ नाटक की तमिल भाषा में शानदार प्रस्तुति चिन्मया स्कूल तड़ाकम रोड़ के चौराहे पर प्रस्तुति दी। स्थानीय लोगों ने इस नाटक की प्रशंसा की। तेरापंथ भवन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। अध्यक्ष मंजू सेठिया ने सबका स्वागत करते हुए महिला दिवस की बधाई दी। मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया । महिला मंडल व कन्या मंडल ने नारी सशक्तिकरण पर लघु नाटिका के द्वारा प्रस्तुति दी। उपाध्यक्ष सुशीला बाफना ने कविता के द्वारा नारी शक्ति पर व्याख्या की। मंडल की बहनों ने भारत की सम्माननीय महिलाओं के बारे में प्रस्तुति दी। पूर्व अध्यक्ष मधु बांठिया ने बताया कि नारी सशक्तिकरण अर्थात् महिलाओं में आध्यात्मिक, राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक शक्ति में वृद्धि करना है। महिला दिवस पर शैक्षणिक क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त मंडल की बहन पूजा दस्सानी को व कैंसर जैसी भयावह बीमारी को अपने मनोबल से हराने वाली बहन मोना जैन को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया । आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष सुमन सेठिया ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन उपाध्यक्ष मोनिका लूणिया ने किया।

## कालू

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य अलका बैद एवं नीरू पुगलिया के साथ सुदीर्घजीवी साध्वी बिदामां जी के दर्शनार्थ और शाखा मंडल की सार संभाल हेतु पधारे। स्थानीय अध्यक्ष चंद्रकला दुगड़ और मंत्री सुनीता सांड द्वारा तिलक लगा कर स्वागत किया गया। शाखा की सार संभाल का कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी उज्जवलरेखा जी के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ किया गया। मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष व कार्य समिति का स्वागत प्रचार प्रसार मंत्री कल्पना सांड द्वारा किया गया। सुमन नाहटा ने स्वरचित कविता पाठ किया। साध्वी उज्जवलरेखा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि नारी का विकास अत्यंत आवश्यक है वह परिवार के साथ समाज व राष्ट्र को भी पोषित करती है नारी के आज के स्वरूप को देखते हुए साध्वी जी ने गुरुदेव तुलसी के प्रति अत्यंत कृतज्ञता ज्ञापित की। गुरुदेव तुलसी के ही श्रम का यह फल है कि आज अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने केसरिया परिधान को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान दी है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने अपने वक्तव्य में बताया कि किस तरीके से महिला परिवार व समाज को साथ लेकर चल सकती है। महिलाओं और कन्याओं को तेरापंथ महिला मंडल और कन्या मंडल से जोड़ने के साथ-साथ आगामी योजनाओं के बारे में अवगत करवाया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष को कालू महिला मंडल के निजी महिला मंडल सेंटर होने पर अत्यधिक गौरव का अनुभव हुआ। उन्होंने कालू के लिए यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताई। आचार्यश्री महाश्रमण जी के पट्टोत्सव के उपलक्ष में अधिक से अधिक अठाई व मासखमण तप करने हेतु प्रेरित किया।

कार्यसमिति सदस्य नीरु पुगलिया और अलका बैद ने नारीलोक के बारे में विस्तृत जानकारी दी। महिला मंडल संरक्षिका मुल्तानी देवी नाहटा ने आभार ज्ञापन किया। मंच का सफल संचालन अध्यक्ष चंद्रकला दूगड़ द्वारा किया गया।

## इरोड

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा नुक्कड़ नाटक के द्वारा महिला सशक्तिकरण की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई। नुक्कड़ नाटक द्वारा यह बताने का प्रयास किया गया कि किस प्रकार भारत की महिलाओं ने पूरे विश्व में अपना नाम रोशन किया है।

उन्होंने बताया कि किस प्रकार आज किसी भी क्षेत्र में महिलाएं पुरुष से कम नहीं है, कोमल हैं पर कमजोर नहीं हैं। लगभग ३२ महिलाओं की उपस्थिति रही। मंत्री श्रीमती पूनम दुगड़ ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

## श्रीडूँगरगढ़

अभातेमम के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल श्रीडूंगरगढ़ द्वारा मालू भवन में 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत से की गई। नारी सशक्तिकरण पर एक नुक्कड़ नाटक कन्या मंडल व महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत किया गया। अध्यक्ष सुनीता डागा ने आए हुए सभी मेहमानों का स्वागत करते हुए अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। साध्वीश्री जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि आज नारी हर क्षेत्र में सक्षम है। महिला धृति है, शक्ति है, शांति है। हर घर की शोभा है, महान शक्ति का नाम है नारी। सभी क्षेत्रों में नारी ने अपना विकास किया है। नारी को सशक्त बनाने के लिए नारी को नारी का साथ देना होगा मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक ताराचंद सारस्वत ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई देते हुए सरकार की तरफ से महिलाओं को मिल रही योजनाओं की जानकारी दी। मुख्य वक्ता पन्नालाल ने अपने वक्तव्य में कहा महिलाओं के पास वह कला है जो घर को बिगाड़ सकती है तो संवार भी सकती है। महिलाओं ने लर्निंग, लेबर, लीडरशिप तीन गुण सीख लिए तो समझो सब कुछ सीख लिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अभातेमम की सभी योजनाओं की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि आप अपने साथ हर महिला को जोड़ें, उन्हें सदस्य बनाएं। पहले अपने घर को मजबूत बनाएं और संस्कारों को सुरक्षित रखें।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का पदाभिषेक दिवस आ रहा है ज्यादा से ज्यादा बहनें जप, तप, अठाई मासखमण से मनाएं। कार्यसमिति सदस्य नीरू पुगलिया ने कहा नारी एक ऐसी प्रज्ञा है जो हर समस्या का समाधान दे सकती है। साध्वी प्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन महासभा कार्यसमिति सदस्य सुशीला पुगलिया ने किया। रेखा भादानी को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। सभा से पवन सेठिया, युवक परिषद से मनीष नोलखा, अणुव्रत समिति से सत्य नारायण स्वामी ने अपने विचार रखे। संचालन परामर्शक संगीता दुगड़ ने किया।

# सहनशीलता आदि गुणों द्वारा अपने परिवार की जिम्मेदारी निभाए

## मारवाड़ स्तरीय 'मेरा परिवार मेरी जिम्मेदारी' आंचलिक कार्यशाला का हुआ आयोजन

**पाली।**

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित मारवाड़ स्तरीय आंचलिक कार्यशाला 'मेरा परिवार मेरी जिम्मेदारी' तेरापंथ महिला मंडल पाली द्वारा मुनि सुमति कुमार जी एवं मुनि जयकुमार जी के सान्निध्य में आयोजित की गई। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात कार्यशाला का शुभारंभ अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के अध्यक्षा सरिता डागा एवं महामंत्री नीतू ओस्तवाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के संगान से किया गया। पाली महिला मंडल अध्यक्षा सुषमा डागा ने स्वागत वक्तव्य दिया।

राष्ट्रीय संरक्षिका सायर बेंगानी द्वारा साध्वीप्रमुखा जी का संदेश पढ़ा गया। मुनि देवार्य कुमार जी ने उद्बोधन देते हुए कहा कि सभी महिलाओं को तत्वज्ञान का कोर्स करने की प्रेरणा दी। महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने एक कहानी के माध्यम से बताया कि परिवार की जिम्मेदारी स्वयं नारी की होती है इसलिए दूसरो की खामियां न देख कर खुद को देखें और पहले खुद को सुधारें, तभी विकास संभव है। विशिष्ट अतिथि डॉ. पूजा सक्सेना (आर. ए. एस. यूटीआई सैक्रेट्री) का साहित्य द्वारा स्वागत किया गया। मंडल की बहनों ने 'मेरा परिवार मेरी जिम्मेदारी' पर एक लघु नाटिका प्रस्तुति की। बहनों को प्रेरणा देते हुए मुनि जयकुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने आत्म रक्षा की बात कही। उन्होंने कहा कि सभी इंद्रियों को छोड़कर आत्मा की रक्षा करो आत्मा को परम तत्व तक पहुंचाना हो तो अपने भीतर रहो।

मुनि सुमतिकुमार जी ने अपने मंगल उपदेश में कहा कि आत्मा शाश्वत है सबसे पहले अपनी आत्मा को देखें। नारी अपने मूलगुणों को समता, ममता, सहनशीलता आदि गुणों द्वारा अपने परिवार की जिम्मेदारी निभाए, अपने भीतर में कृतज्ञता, प्रमोद भावना, गुणानुवाद की भावना होनी चाहिए और परिवार में प्रेम, स्नेह, विनय, वात्सल्य, सहिष्णुता आदि गुणों का विकास होना चाहिए। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा सरिता डागा ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए बताया कि आचार्यश्री तुलसी ने हमें रूढ़िवाद से मुक्त किया पर जिम्मेदारी से मुक्त नहीं किया, इसलिए हमें अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। महिलाओं को हर परिस्थिति में समता से काम लेना चाहिए। प्रिंसिपल महक धोका का तेरापंथ महिला मंडल पाली द्वारा सम्मान किया गया। कार्यशाला में १५ क्षेत्रों - पाली, बालोतरा, बायतु, बाड़मेर, जोधपुर सरदारपुरा, जोधपुर जाटाबास, कनाना, असाड़ा, पचपदरा, जसोल, टापरा, सोजत रोड़, सोजत सिटी, बागावास, रानी स्टेशन से बहिनों की उपस्थिति रही। अंत में तेरापंथ महिला मंडल मंत्री सीमा मरलेचा ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

# आत्मानुशासन की प्रेरणा देता है अणुव्रतः आचार्यश्री महाश्रमण

**माणगांव।**
**६ मार्च, २०२४**

महायोगी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ माणगांव पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित अणुव्रत गीत में पहला पद्य आत्मानुशासन से सम्बन्धित है।

**'अपने से अपना अनुशासन,**
**अणुव्रत की परिभाषा।**
**वर्ण, जाति या संप्रदाय से, मुक्त**
**धर्म की भाषा।**
**छोटे-छोटे संकल्पों से, मानस**
**परिवर्तन हो।।'**

स्वयं के द्वारा स्वयं पर अनुशासन करना अणुव्रत की परिभाषा है। दूसरों के द्वारा किया गया अनुशासन परानुशासन हो जाता है। स्वयं अपने विवेक से सही मार्ग पर चलें, संयमित रहें और सदाचार के पथ पर चलें। दो शब्द हो जाते हैं- आत्मानुशासन और परानुशासन। दूसरों पर अनुशासन करने वाले को खुद पर भी अनुशासन करने का प्रयास करना चाहिये। अनुशास्ता बनना बड़ी बात है पर उसकी पृष्ठभूमि में भी आत्मानुशासन होना चाहिए। दूसरों का अनुशास्ता तो कोई बनाए या ना बनाए पर आत्मानुशास्ता जरूर बनें।

अणुव्रत के संकल्प स्वीकार किये जाते हैं, संकल्प आदमी इच्छा से स्वीकार करता है इसलिए अणुव्रत स्वयं पर अनुशासन करना सिखाता है। अणुव्रत एक ऐसा धर्म है, जो वर्ण, जाति और सम्प्रदाय से मुक्त है, जिसके माध्यम से छोटे-छोटे संकल्पों को स्वीकार करने की प्रेरणा दी जाती है जिनसे मनुष्य का हृदय परिवर्तन हो सकता है।

मनुष्य तंत्र-मंत्र के प्रयोग से देवी-देवताओं को वश में करने का प्रयास भी करते हैं। पर जब तक हमारा मन हमारे वश में नहीं होगा तो देव हमारे वश में कैसे हो पाएंगे? हमारे मन, वाणी, शरीर व इन्द्रियों पर हमारा अनुशासन हो। अपनी आत्मा को वश मे करना ही सबसे बड़ा तंत्र-मंत्र-यंत्र है।

साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिनके सामने चिन्तामणी रत्न, कल्पवृक्ष, कामधेनु का मूल्य भी कम हो जाता है, जो अपने शिष्य की मति और वैभव को निर्मल करते हैं, ऐसे गुरु चरण हमेशा विजय को प्राप्त करें। माणगांव वासी सौभाग्यशाली है कि यहाँ ऐसे गुरु का शुभागमन हुआ है।

आचार्यप्रवर के स्वागत में अशोक बंब ने अपने भाव अभिव्यक्त किए। तेयुप, जैन संघ महिला मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल ने अपनी-अपनी की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई । कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

# परम शांति के लिए अध्यात्म के अलावा और कोई मार्ग नहीं : आचार्य श्री महाश्रमण

**वहूर।**
**८ मार्च, २०२४**

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी कोंकण के वहूर क्षेत्र में पधारे। उपस्थित परिषद् को पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए महायोगी ने फरमाया कि मोक्ष की स्थिति परम स्थिति होती है। आत्मा संसार में जन्म-मरण की परम्परा में भ्रमण करती रहती है। एक बार जब मोक्षावस्था प्राप्त हो जाती है तब वह आत्मा पुनः जन्म-मरण नहीं करती। हमेशा के लिए वह जन्म मरण से मुक्त हो जाती है।

प्रश्न हो सकता है कि मोक्ष इतना ऊंचा, परम सौख्य वाला स्थान है, वह मोक्ष की अवस्था कैसे प्राप्त की जा सकती है? मोक्ष का मार्ग ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप का मार्ग है, इस मार्ग पर चलने से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

ज्ञान से भावों को, पदार्थों को आदमी जानता है। दर्शन से श्रद्धा होती है, चारित्र से कर्म के आने का रास्ता निरुद्ध होता है और पहले से जो कर्म बंधा हुआ है, उनकी शुद्धि तप के द्वारा होती है। ज्ञान के बिना जीवन में अन्धकार है। ज्ञान मिलने से जीवन में प्रकाश मिल जाता है।

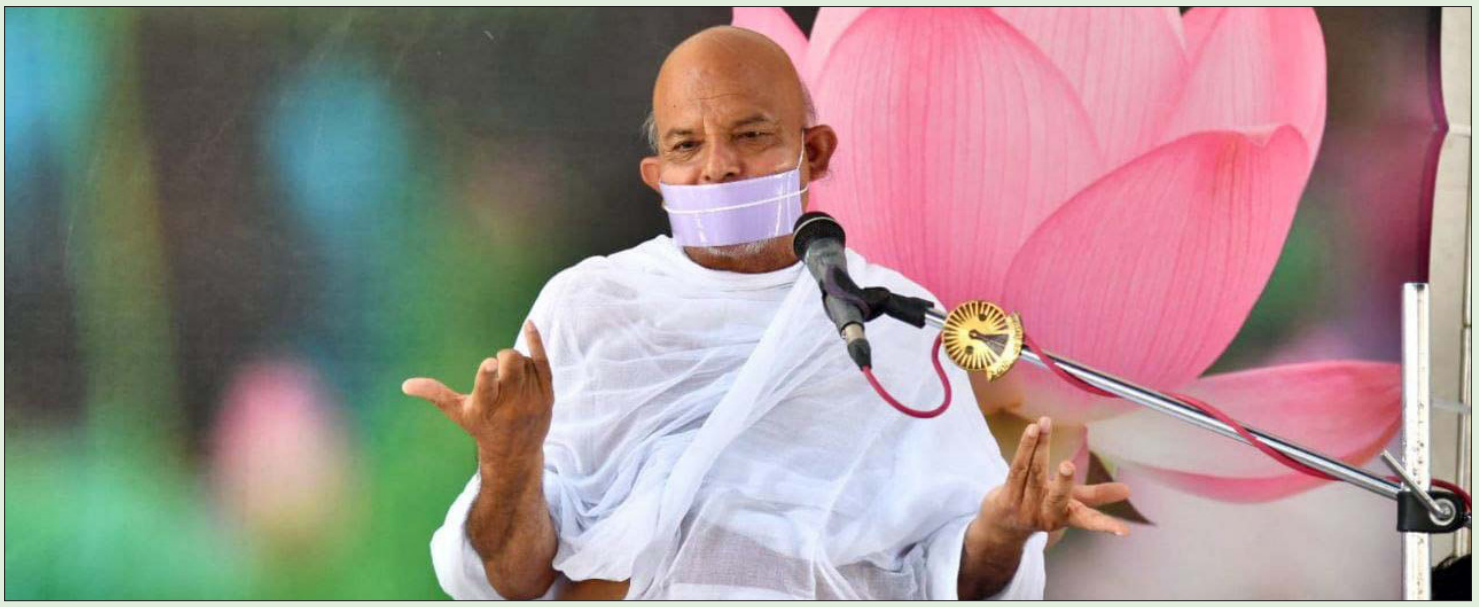

देखने के लिए चार चीजों के आवश्यकता है- नेत्र भी हो, जिसको देखना है वह दृश्य भी हो, सहायक के रूप में प्रकाश भी हो और पुरुषार्थ के रूप में देखने की प्रवृत्ति, चेष्टा भी हो। इनसे किसी चीज का सम्यक दर्शन हो सकता है। ज्ञान एक प्रवृत्ति है अध्ययन करना है, तो विद्यार्थी, शिक्षक, पुस्तक, विद्यालय आदि भी चाहिए। विद्यालय ज्ञान ग्रहण कराने में सहायक है।

हम अपने जीवन में अध्यात्म विद्या, तत्वज्ञान भी सीखने का प्रयास करें। पदार्थों से परम शांति नहीं मिलती है। अध्यात्म से परम शांति मिल सकती है। परम शांति पाना है, मोक्ष पाना है तो अध्यात्म का, धर्म का, ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप के मार्ग के अलावा दूसरा कोई मार्ग नहीं है। आचार्य भी ज्ञान के नियंता होते हैं, तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते है। आचार्य भी तारने वाले होते हैं। हम गुरुओं से ज्ञान ग्रहण कर मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें।

पूज्यवर के स्वागत में जिला परिषद सदस्य जीतू सावंत एवं लादूलाल गांधी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

# अहंकार की भावना साधक की साधना को कर सकती है मंद: आचार्य श्री महाश्रमण

**पोटनेर।**
**५ मार्च, २०२४**

अनन्त आस्था के केन्द्र आचार्य श्री महाश्रमण जी लगभग १४ किमी का विहार कर पोटनेर के श्री कोंकण पार्श्व जैन तीर्थ धाम पधारे। मंगल देशना प्रदान कराते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री ने फरमाया कि कई साधक इस जीवन के पश्चात् देवलोक में चले जाते हैं तो कई मोक्ष में भी चले जाते हैं, सिद्धि को प्राप्त हो जाते हैं। मोक्ष को प्राप्त करना बहुत विशेष बात हो जाती है, परंतु मोक्ष प्राप्त करने के लिए अध्यात्म की उच्चता की अपेक्षा होती है। सदा उपशांत रहने वाले, अममत्व रखने वाले, अकिंचन साधक, अध्यात्म की उच्च साधना कर सकते हैं। जो साधु अपनी साधना व संयम में लीन रहने वाले होते हैं, वे केवलज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं। केवलज्ञान प्राप्ति के बाद उस जीवन के पश्चात मोक्ष निश्चित हो जाता है।

आदमी को उपशांत, क्षमाशील होना चाहिए। अहंकार, मोह, माया, लोभ का भाव नहीं रखना चाहिए। आदमी के भीतर कभी-कभी अहंकार का नाग भी फुफकारता है। किंचन, ज्ञान अथवा कुछ होने का घमंड आदमी को हो सकता है, पर उपलब्धि का घमंड नहीं होना चाहिए।

ज्यूं वन की वनराजिया, खाती देख खपाय। त्यूं साधक की साधना, ख्याति देख खपाय।। जैसे जंगल में कोई खाती पेड़ को काट दे, वैसे ही ख्याति या अहंकार की भावना साधक की साधना को मंद कर सकती है।

कहा गया है-जब मैं था तब प्रभु नहीं थे, जब प्रभु विराजमान हो गए तब मैं नहीं। प्रेम की गली अति संकड़ी है उसमें अहंकार और विनय दोनों साथ साथ नहीं चल सकते। कोई व्यक्ति बड़ा है पर बड़ा बनना भी आसान नहीं है, उसके लिए कितना तपना-खपना पड़ता होता है। ज्ञान प्राप्त करना है तो अहंकार को थोड़ा दूर रखें। ज्ञान और ज्ञानदाता दोनों के प्रति विनय का भाव रखें।

जो अभिवादन शील है, वृद्धों की सेवा करने वाला है, उसके चार बातों का विकास हो सकता है- आयुष्य, विद्या, यश-कीर्ति और बल। अहंकार को हम नकार कर दें। जीवन में आध्यामिक या भौतिक उपलब्धियां हो सकती हैं, दोनों का महत्व भी हो सकता है। साधना करने वालों को भी कई लब्धियां प्राप्त हो सकती है। लब्धियों से अनिष्ट भी किया जा सकता है और किसी को बचाया भी जा सकता है। बड़ी उपलब्धि केवलज्ञान और वीतरागता की प्राप्ति है, परम उपलब्धि मोक्ष की प्राप्ति है। हमें अंहकार-घमंड से बचना चाहिए, मान अहंकार को छोड़ कर निरहंकार बनना चाहिए, यह आत्मा के लिए हितकर बात हो सकती है।

पूज्य प्रवर ने अणुव्रत गीत एवं 'प्रभु पार्श्व देव चरणों में' गीतों का आंशिक संगान करवाया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

## अर्हम्
## "शासनश्री" साध्वीश्री सोमलताजी का देवलोकगमन

### जीवन परिचय

| | |
|---|---|
| जन्म : | 7 नवंबर 1951, वि.सं. 2008, कार्तिक शुक्ल अष्टमी, गंगाशहर |
| जन्म नाम : | शांति |
| माता-पिता : | 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' 'कल्याण मित्र' रत्नगर्भा स्व. श्रीमती केशर देवी बैद - स्व. रतनलालजी बैद |
| शिक्षा : | पारमार्थिक शिक्षण संस्था में एम.ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण |
| दीक्षाः | महासती लाडांजी के कर-कमलों से 14 अक्टूबर 1968, वि.सं. 2025 कार्तिक कृष्ण अष्टमी, बीदासर में। |
| अग्रगण्य : | सन् 1982 वि.सं. 2039, गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी के मुखारविंद से मुसालिया (मारवाड़) में। |
| यात्रा : | राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, सिक्किम, असम, नेपाल, भूटान। |
| साहित्य : | स्वरमंजरी, स्वर निकुंज, स्वर वाटिका, चहक महक, सुरांजलि, पुष्पांजलि, गीत माधुरी आदि। |
| तपस्या : | सैकड़ों उपवास, अनेक बेले तेले, एक अठाई। |
| कंठस्थ : | दशवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि, नीतिशतकम्, सिंदूर प्रकर, शांत सुधारस, नाममाला। |
| 'शासनश्री' अलंकरण : | महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा वि.सं. 2074 पौष कृष्ण तृतीया, चास बोकारो। |
| धर्मसंघ में दीक्षित पारिवारिक सदस्य : | 'शासनश्री' मुनिश्री गणेशमल जी स्वामी (नानोसा महाराज),<br>'उग्रविहारी तपोमूर्ति' मुनि कमलकुमार जी स्वामी (अनुज भ्राता)<br>मुनि ध्यानमूर्ति जी (जीजा जी)<br>साध्वी लिछमां जी (बहन)<br>साध्वी विनम्रयशा जी (बड़ी भाभी)<br>'शासनश्री' साध्वी मधुरेखा जी (मौसी की बेटी)<br>साध्वी शारदाश्री जी (मौसी)<br>साध्वी संवेगप्रभा जी (भतीजी)<br>साध्वी मधुलता जी (बहन)<br>साध्वी जिनबाला जी (बहन)<br>साध्वी मुदितप्रभा जी (भतीजी)<br>समणी मधुरप्रज्ञा जी (मौसी)<br>समणी जयंतप्रज्ञा जी (भतीजी) |
| संथारा : | दिनांक 08 मार्च 2024 |
| तिविहार प्रत्याख्यान : | चौविहार तेले में रात्रि 2:51 बजे साध्वी शकुंतलाकुमारी जी द्वारा। |
| चौविहार प्रत्याख्यान : | प्रातः 7.01 बजे 'उग्रविहारी तपोमूर्ति' मुनिश्री कमलकुमार जी द्वारा। |
| स्वर्गवास : | प्रातः 7.37 बजे दिनांक 08 मार्च 2024, शुक्रवार, तेरापंथ भवन, दादर, मुम्बई |

## होली शुभकामना संदेश

**अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स की तरफ से सभी शुभचिंतकों एवं सुधी पाठकों को होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।**

## आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

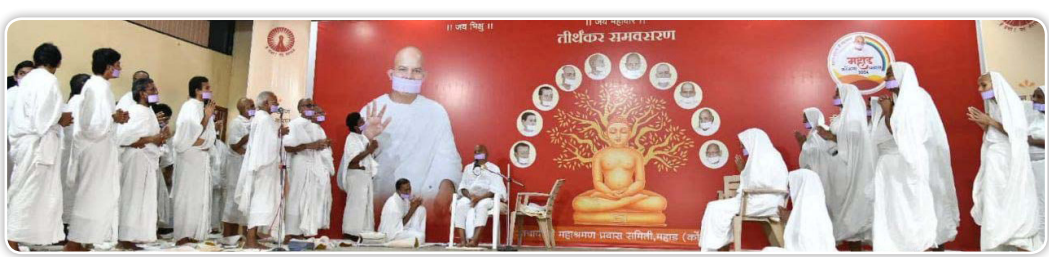


अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**